श्रीः।

ब्रजचरित्र।

जिसको

श्रीयुत ब्रह्मचारीजीमहाराजश्रीगिरधारीदास-
जीका शिष्य विहारीदास श्रीवृन्दावन निवा-
सीने परब्रह्म श्रीकृष्णचन्द्र आनन्दकन्दकी
परम अद्भुत मनरंजन दुःखभंजन मुक्ति
दायक लीलायें दोहा चौबोलोंमें
निर्मित किया।

भगवद्भक्तोंके हितार्थ-

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुम्बई,

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखानामें

छापकर प्रसिद्ध किया।

शके १८१८ संवत् १९५३ · 25 · ००

श्रीराधाकृष्णचन्द्रजी.



धन्य है पुजारी बिहारीदासजीको जिन्होंनें श्रीकृष्णचन्द्र-जीकीलिला सरल छन्दोंमें गाय प्रेमियोंको आल्हादित किया जिसके पठनमात्रसे सर्वाभीष्ट सिद्ध होते हैं ॥


गणेशजी.

ब्रजचरित्र.



श्रीः ।

अथ ब्रजचरित्रका सूचीपत्र ।

अथोत्तरार्द्धम्।

इति ब्रजचारित्रका सूचीपत्र समाप्त ॥

श्रीगणेशाय नमः।

अथ ब्रजचरित्र प्रारंभः।

दोहा—जाके गुण उरगनतही, होत गुणनकी खान॥
वासुदेव भगवंत हरि, दिव्य सु दयानिधान॥
जासुनाम मुखसे कहत, मिटतताप त्रयतास॥
नंदसुवन सुन्दर सुखद, वन्दौंसो शुभरास॥
गोप वृन्द मंडन सुभग, कमलनैन तनु श्याम॥
पीतांबर बर बेणुधर, करहु सो मम उरधाम॥
कृष्णाग्रज बलदेव पद, वन्दौं जगत आधार॥
नीलांबर रेवती रमण, अभिमत फल दातार॥
वन्दौं पद महिमातधर, श्रीगुरु कृपानिधान॥
नरचढि भवसागर तराहिं,जासु वचन लखियान॥
पदसरोजरज राखिशिर, वन्दौं संत कृपाल॥
जिन निजगुण हरि वशकरे,जगहि तरत शुभमाल
परमरम्य पावन परम, पुनि वन्दौं ब्रज देश॥
राधा नाथ विहार थल, महिमा जासु विशेष॥
प्रथम नऊं वसुदेव पद, बहुरि देवकी माय॥
नंद महर चरणन नमाहिं, श्रीयशुमति सुखदाय॥

चौबोला—श्रीयशुमतिसुखदायतिहारोभाग्यनजात गिनायोजी॥
साखी देत मुनीजन सब मिल वेद पुराणन गायोजी॥
तुमते और कौन बड़भागी तुम हित हरि ब्रज आयोजी॥
धरचो मनुजको रूप हरीसो तुमने गोद खिलायोजी॥ १॥

वन्दौं श्रीसुख मात रोहिणी बलदाऊकी माताजी ॥
कीरत युत वृषभानु गोपवर चरणनशीशनवाताजी ॥
त्रिभुवन ठाकुर ठकुरानीके हौ तुम पितु अरु माताजी ॥
कृष्ण प्राण जीवन प्यारीके सुमिरत पाप नशाताजी ॥ २ ॥

दोहा—श्रीराधाके पद कमल, वार वार बलि जात ॥
होत कृष्ण यश सहजही, प्रेम सहित जोगात ॥

चौबोला—प्रेम सहित जो गात तिहारे चरण कमल बलिहारीजी ॥
ब्रज चरित्र लीलाकरनेहित उभय देह तुम धारीजी ॥
हौ तुम एकहि आद्य सनातन नहिं हरिते तुम न्यारीजी ॥
वन्दौं युगल किसोर रूप पद विहारनतन मन वारीजी ॥ १ ॥
अपर गोप गोपी गोपाला गाय बच्छ अरु ग्वालाजी ॥
जिनके सखा कृष्ण अविनाशी संग विचरे नंदलालाजी ॥
और जातजे ब्रजहि निवासी वन्दौं परम कृपालाजी ॥
मथुरापुरी नारि नर नागर गोकुल दीनदयालाजी ॥ २ ॥

दोहा—श्रीयमुना सर निरखिमन, उपजत प्रेम पुनीत ॥
जासु दरशनरकरतही, यमपुरको नहिं भीत ॥

चौबोला—यमपुरकोनहिं भीत यमुनके रहूं चरणमें लागाजी ॥
वन्दौं जलचर जीव जितेका प्रेम सहित अनुरागाजी ॥
वन घन नग्र मही अरु पर्वत बापी कूप तड़ागाजी ॥
खग मृग गुल्म लता बंसीबट वृन्दावनादिजे बागाजी ॥ १ ॥
वंदतहूं पद कमल तुम्हारे श्रीगोवर्धन रायाजी ॥
सुरपति भेट मेटि सब ब्रजमें निजकर आप पुजायाजी ॥
श्रीयमुना तट परम पुनीता तहां हरि खेल रचायाजी ॥
वन्दौं सकल सुकृतकी राशी पुनि पुनि शीश नवायाजी ॥

दोहा—कीनो रास विलास जहां, भक्तनके हित लाग ॥

वन्दौं सो शुभ भूमि रज, सहितप्रेम अनुराग ॥
चौबोला—सहित प्रेम अनुराग तिहारी बार बार बलिजाऊंजी ॥
कीट पतंग आदि सब विनऊं जड़ चेतन्य मनाऊंजी ॥
ब्रज जन पद रज राखि शीशपरं तुमरी आज्ञा पाऊंजी ॥
पूरौ मेरी आश दयाला ब्रह्म चरित्र कछु गाऊंजी ॥ १ ॥
करन पुनीत हेत निज वाणी करिहौं चरित वखाणीजी ॥
जबलगि तुम्हरी कृपा न पावै नहिं आवत कछु गाणीजी ॥
मैं मन वच क्रम तुमरो दासा लीज्यो मनकी जाणीजी ॥
यद्यपि मति इतनी मोहिनाई करौं युक्ति कछु आणीजी ॥ २ ॥
दोहा—हरिप्रेरक ऐसो भयो, कीन्हो मनहि विचार ॥
सुनी कथा भागवतकी, सो बल उरमें धार ॥
चौबोला—सो बल उरमें धार हरीकी महिमा बहु विध गाईजी॥
श्रीपति ब्रह्माको उपदेशो सो नारदने पाईजी ॥
नारद वेदव्यास हित कारन दीनो सुयश सुनाईजी ॥
वेदव्यासजी शुकहु पढाये सो सब जगमें छाईजी ॥ १ ॥
सो रस सार सूरसागरमें सूरदासजी गायाजी ॥
वाणी रची अनेक विविधिवर मुनि जनके मन भायाजी ॥
बड़े कठोर मोहवश तेऊ सो सुनिकै हरषायाजी ॥
ताके लखे दास ब्रजवासी ब्रजबिलास मन लायाजी ॥ २ ॥
दोहा—धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज, धनि धनि ब्रजको वास ॥
धनि यह रस वर्णन करचो, धनि ब्रजवासी दास ॥
चौबोला-धनि ब्रजवासी दास तिहारी कहां लगि करौं बड़ाईजी॥
लीला अमितश्याम सुन्दरकी प्रेम सहित तुम गाईजी ॥
दोहा सोरठा अधिक मनोहर छंद और चौपाईजी ॥
विछुरन मिलन मोह अरु माया प्रगटहि परत लखाईजी ॥ १ ॥

सो तो कथा अमित विस्तारा पायो जात न पाराजी ॥
ताको निरखि करौं चोबोला ये निज मतमें धाराजी ॥
ताको दोष क्षमा करियो तुम मैं हूं दास तिहाराजी ॥
मोमनकी अभिलाष पुरावो करियो मोहिं सुखाराजी ॥ २ ॥
दोहा—मोतन इतनी गम नहीं, रचौं छंद कछु तोल ॥
हरि प्रेरक ऐसो भयो, धरौं रहा चौबोल ॥
चौबोला—धरौं रहा चौबोल तहां मम निज मतिमें यह आईजी॥
एक दोहा तर दो चौबोला यह विधि गाय सुनाईजी ॥
कहूं कहूं पर कहूं लावनी अति सुन्दर सुखदाईजी ॥
एकवार्ता श्यामसुन्दरकी विहारनके मन भाईजी ॥ १ ॥
बिन देखे पिंगलके जगमें जो कोउ छंदः बनावेजी ॥
कथहि ज्ञान बिन गीता कोऊ सो नर पशू कहावैजी ॥
पिंगल अरु गीता यह दोऊ विहारन पै नहिं आवैजी ॥
कोऊ कछू कहो किन विहारन नाम हरीको गावैजी ॥ २ ॥
दोहा—ह्रस्व दीर्घ जानूं नहीं, दध अक्षर कहा होय ॥
हरी नाम इति लाभ हित, लोभ करों मैं दोय ॥
लोभ करौं मैं दोयं नामको निजमति में मैं चीनाजी ॥
हरि नामाक्षर लाभ दुयं हित सबै दोष शिर लीनाजी ॥
ब्रजचरित्र कछु कहूं बखानी ज्ञान गुरूजी दीनाजी ॥
बिहारन भज राधा माधवको जगमें थोराजीनाजी ॥ १ ॥
अब मैं विनय करतं कवियनसों पुनि पुनि बारं बारीजी ॥
यामें चूक परीजो होई लीज्यो सुजन सुधारीजी ॥
जिहिं तिहिं बिध हरि गान करको मैं यह बुद्धि विचारीजी ॥
बिहारनयों विनवत कवियनसों सुनियो अरज हमारीजी ॥ २ ॥
दोहा—संतनको शिरनायके, गाऊं हरियशरीत ॥

जो ब्रजमे हरिनें कियो, सुन्दर ब्रजहिचरीत॥
चौबोला–सुन्दर ब्रजहिचरीत हरीको प्रेम सहित मैं गाऊंजी॥
यामें बुद्धि नहीं कछु मेरी ब्रजवासी पै पाऊं जी॥
नामै पंडित हूं कोइ ज्ञाता कवि न सुजान कहाऊंजी॥
ब्रजचरित्र कछु गाय सुनाऊं भजन भावमनलाऊंजी॥ १॥
कर्म धर्म नहिं नीत बखानी नाम हरीका गायाजी॥
हरिके नाम अनंत जगत्में पारकोई नहिं पायाजी॥
ब्रजचरित्र हिरदेमें धरिकै मन चंचल वहलायाजी॥
हाथ जोर शिरनाय भूमिपर शरन गुरुनके आयाजी॥ २॥
दोहा–भक्तनके हित अवतरे, करि वृन्दावन वास॥
ब्रह्मचरितको धारिकै, पूरी सबकी आस॥
चौबोला–पूरी सबकी आश गुरुनके चरण शरनमें आयाजी॥
ज्यों ज्यों जीव गये शरणागत मन वांछित फल पायाजी॥
देश देशके सेवक जे सब चरणन ध्यान लगायाजी॥
अपर लोगमैं कहा गिनाऊं भूपति शीश नवायाजी॥ १॥
वारंवार करौं मैं विनती चरणन शीश नवाऊंजी॥
मोपर होउ दयाल कृपानिध चरण शरनमैं चाऊंजी॥
राखो अब चरणनके भाई तुम्हरो दास कहाऊंजी॥
पूरो मनकी आश दयाला कछु यक आज्ञा पाऊंजी॥ २॥
दोहा–हंस आदि वंदन करों, श्रीनिंमारक देव॥
निवासादि आचार्य सब, करों चरणकी सेव॥
चौबोला–करों चरणकी सेव तुम्हारे चरण कमल चित लाताजी।
मो सम दीन नहीं कोउ जगमें तुम समान नहिं दाताजी॥
जबलगि तुम्हरी कृपा न पावै फिरत रहत भरमाताजी॥
जापर कृपा करो तुम तबही सो शरणागत आताजी॥ १॥

कृपा भई जब गुरु अपनेकी पूरी मनकी आशाजी ॥
दीनौं मंत्र सुनाय श्रवन में मेटे यमके त्रासाजी ॥
करि वृन्दावन वास हृदयमें राखि हरी सुखरासाजी ॥
जन्म सुफल होजाय तिहारो नाम बिहारी दासाजी ॥ २ ॥

दोहा—वृन्दावन में बास बस, कीने भक्त निहाल ॥
जो जाने इच्छा करी, सो पूरी तत्काल ॥

चौबोला—सो पूरी तत्काल आपकी महिमा अद्भुत भारीजी ॥
पार नहीं पायो काऊने कहत सबै ब्रह्मचारीजी ॥
श्रीनिंमार्क वंश मझारी आप भये अवतारीजी ॥
श्रीगुपाल बिन और न देख्यो नाम दास गिरिधारीजी ॥ १ ॥
प्रथमहिं राव मिले जीवाजी पुत्र जिन्होंनें पायाजी ॥
बहुरौ माधवेश मिले सो पति आमेंरसुहायाजी ॥
भूपति और मिले बहुतेरे जात न मोहिं गिनायाजी ॥
जो जाकी इछाही जैसी तैसो ताने पायाजी ॥ २ ॥

दोहा—सतगुरुकी आज्ञा भई, संतनको शिरनाय ॥
बिना कृपा तिनकी भये, हरि यश गाय न जाय ॥

चौबोला—हरियश गाय न जाय सकलसंतनको शीशनवाऊंजी॥
जिनकी कृपा विघ्न सब नाशै विमल मतीमैं पाऊंजी ॥
जिनकी कृपा मोह तमनाशै ज्ञान हृदयमें चाऊंजी ॥
करौं नामको गान अरथ निज वाणी सूध कराऊंजी ॥ १ ॥
जै जै जै श्रीकुंज विहारी श्रीवृषभान दुलारीजी ॥
युगल किशोर मनोहर मंगल मूरति आनँद कारीजी ॥
रूप निधान प्रेमकी रासी भक्तनके भयहारीजी ॥
श्रीवृंदावन धाम निवासी राधा कृष्ण मुरारीजी ॥ २ ॥

अथ कथा प्रसंग वर्णन ।

दोहा–संवत सत है एकनव, चोकें आठें जाण ॥
माघ सुसुकला पक्षमें, कीनों चरित बखाण ॥

चौबोला–कीनों चरितवखाणवसंतउत्सवकोदिन अतिभारीजी॥
उडत हैं रंग गुलाल हर्षि सब गावत हैं नर नारीजी ॥
अंत नक्षत्र जान रेवती तिथि पंचामि बुधवारीजी ॥
जान कृष्णके चरित पुनीता गावत दास विहारीजी ॥ १ ॥
कहूं कथा सुन्दर सुख देनी सकल सुखनको साराजी ॥
अघहरनी वैकुंठ निसेनी पापनको जिमि आराजी ॥
श्रीकालिंदि तटया शुभ पावन मधुपुरी नग्र अपाराजी ॥
कृष्ण कृपा विन सुलभ न सोई तरसत देव विचाराजी ॥ २ ॥

दोहा – श्रीकालिंदी तट मधुपुरी, राजत सुन्दर रूप ॥
नीत निपुण पालन करैं, उग्रसेन तहां भूप ॥

चौबोला–उग्रसेन तहां भूप अनुज भ्राता गृह जाई बालाजी ॥
धरयो देवकी नाम रूप गुणकी आति सुन्दर आलाजी ॥
नृपको सुवन महा अतिपापी कंसनाम विक्रालाजी ॥
आपभयो भूपाल पिताको डारयो वंदीशालाजी ॥
तब देवक कर जोर कंससों विनती जाय सुनाई जी ॥
दिन दिन तरुण होत है कन्या करहूकहूं सगाईजी ॥
शूरसेन सुत है वसुदेऊ शीलवंत सुखदाईजी ॥
लोक वेद कर रीत कंसने दई देवकी व्याईजी ॥ २ ॥

दोहा–तबै कंस वसुदेवको, दई देवकी व्याय ॥
आप भयो रथवान तहां, पहुँचावनको जाय ॥

चौबोला-पहुँचावनको जाय कंसआति धर मनमें अभिमानाजी॥

दायज दियो अनेक भूपने हय गज बिविध विधानाजी ॥
दासी दास दिये बहुतेरे पट भूषण विधि नानाजी ॥
बाणीभई अकाश तहां तब सो सब जगने जानाजी ॥ १ ॥
होय आठवों काल कंसको वाणी यहै सुनाईजी ॥
मिट्यो सकल आनंद हृदयको सोचरह्यो मन माईजी ॥
पहिले डारों मार देवकी लीन्हों खड्ग उठाईजी ॥
दीजै तरुको खोय मूलते बहुरि कहां फल आईजी ॥ २ ॥

दोहा—तब बोले वसुदेवजी, सुनो श्री महाराज ॥
वेद विरोध न कीजिये, करो समुझके काज ॥

चौबोला—करो समुझके काज भूप यह मनमें साँच विचारोजी ॥
तिय वध वेद कहत यह वाणी होत दोष प्रति भारोजी ॥
यह तुम्हरी है बहन देवकी याको तुमजिनमारोजी ॥
याको सुवन तुमहिं मैं देहौं जोहै शत्रुतिहारोजी ॥ १ ॥
मुनि जन गुरुजन हे तहां जेते बात सबन यह जानीजी ॥
कह्यो कंस सुनो वसुदेऊ बात नीक तुम ठानीजी ॥
अठवों पुत्र होय जो याके सो दीज्यो तुम आनीजी ॥
भाव विविस तब भूप कंसने मन अपनेंमें मानीजी ॥ २ ॥

दोहा—राखे तिनको नग्रमें, कछु यक दिवस बिताय ॥
प्रथम देवकी गर्भमें, भयो पुत्र तहां आय ॥

चौबोला—भयो पुत्र तहां आय देवकी लियो पतिपास बुलाईजी॥
लै वसुदेव चले तिहिं काला भूप कंस पै जाईजी ॥
बालक देखि कंस हँस दीनों याकोडर मोहिं नाईजी ॥
अठवों गर्भ शत्रु है मेरो सो तुम दीजो ल्याईजी ॥ १ ॥
तब वसुदेव कंस सों विनती करिकै क्षमा कराईजी ॥
लै बालक निज सदन पधारे दंपति भये हरषाईजी ॥

१ वृक्ष। २ पुत्र। ३ घर।

तबहिं बात यह स्वर्गलोकमें नारदजी सुनि पाईजी ॥
बालक दीनो फेर कंसने भली भई यह नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–गुण गावत गोविंदके, लिये हस्त तलवीन ॥
तब ऋषि नारद कंस पै, आये परम प्रवीन ॥
चौबोला–आये परम प्रवीन देखिकै उठ्यो कंस शिरनायाजी ॥
बहु विधि पूजाकरी ऋषीकी सिंहासन बैठायाजी ॥
समाचारजे कछु है आये ऋषि सों कहि समुझायाजी ॥
सुनि नृप वचन बिहँसि ऋषि बोले कतभूले तुम रायाजी ॥१॥
अठवों कौन सो तुम कछु जाना जासों तुम भय मानाजी ॥
सो वह प्रथमहिं आयो होई देवचरित किन जानाजी ॥
आठ लकीरः खैंच गिनवाई भूपर चक्र विधानाजी ॥
यों समुझाय गये ऋषि नारद कंसासुर भयआनाजी ॥ २ ॥
दोहा–तब नृप दूत पठायकै, बालक लियो मँगाय ॥
ताही क्षण मारत भयो, डारयो शिलपर जाय ॥
चौबोला–डारयोशिलपरजाययही विधिषटबालक नृप मारेजी।
पुत्र बधन तब देखि मात पित अतिही भये दुखारेजी ॥
कहत अहो श्रीपति असुरारी भक्तनके रखवारेजी ॥
वेगलेहु प्रभु सुरत हमारी कंस देत दुख भारेजी ॥ १ ॥
बाढ्यो पाप कंसको भारी भूमी भई दुखारीजी ॥
सह न सकी तब गोतनु धर ब्रह्मासों जाय पुकारीजी ॥
क्षीर सिंधु तट जाय सकल सुर हरिसों विनय उचारीजी ॥
धरहु मनुज तनु जाय भूमिको दीजै भार उतारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भई गिरा नभ सिंधु तट, श्रवणन परी पुकार ॥
जाहु धरहु तुम गोप तन, मैं लेहों अवतार ॥
चौबोला–मैं लेहों अवतार भूमिपर भूको भार उतारोजी ॥

करों सहाय संतनकी पलमें दुष्टनको संहारोंजी ॥
मोहित करी तपस्या भारी सो प्रतिव्रतमैं पारोंजी ॥
मो सम पुत्र मांगि तिनलीनो सो अब कर निरवारोंजी ॥ १ ॥
तब श्रीपति हरि क्षीर सिंधुतन मन मन बात विचारीजी ॥
करी प्रगट माया निज हरिने तासों कहत मुरारीजी ॥
सप्तम गर्भ शेश मम बासा सो तू हर तहांजारीजी ॥
करि यशुमत तन बास बहुरिमैं मिलिहौं तोहि तिहिं ठारीजी२

दोहा–तब माया ब्रजको चली, कियो काज तिन आय ॥
हरयो गर्भ ले तुरतही, दियो रोहिणी जाय ॥

चौबोला–दियो रोहिणी जाय शक्तिने माया चरित उपायाजी॥
तब श्रीअविगति पुरषोत्तमनें गर्भनिवास जनायाजी ॥
सब देवन मिल करी अस्तुती जै जै कहि हरषायाजी ॥
सो कारण जान्यो नहिं काऊ मुनि जनके मन भायाजी ॥ १ ॥
निजमुख मुकुर[1] देवकी देख्यौ शरद चंद्र दरशायाजी ॥
मिट्यो तिमिर[2] भ्रम अति सुख जान्यों कंसकाल हरि आयाजी
तब यों विनती करी देवकी पतिसों कहि समुझायाजी ॥
हैं मम उदर देव भगवाना यह मोहिंपरत लखायाजी ॥ २ ॥

दोहा–अब तुम पति या पुत्र हित, करहूवेग उपाय ॥
जिहिं तिहिं विध बालकरहै, सत्य धर्मबरु जाय ॥

चौबोला–सत्यधर्म बरु जाय हमारे कुलको नाश न जावेजी ॥
ऐसोको अब हितू तुम्हारो बालक राखि दुरावेजी ॥
पाँयन परे निगड अति भारे जान कवन विधि पावेजी ॥
षट बालक वध सुमिर देवकी मनहीं मन पछितावैजी ॥ १ ॥
तात मात अति दुखित जान तब करुणासिंधु दयालाजी ॥
दुखमोचन लोचन सुखदायक प्रगट भये तिहिं कालाजी ॥

१ दर्पण। २ अंधकार।

हरि आयशु पाई सो शक्ती प्रगटी नंद घर बालाजी ॥
ताके प्रगटत भये नीद वश गोकुल गोपी ग्वालाजी ॥ २ ॥
दोहा–भादों कृष्णा अष्टमी, रोहिणि शुभ बुधवार ॥
अखिल लोकपति अर्धनिशि, आय लियो अवतार ॥
चौबोला–आय लियो अवतार हरीनें चार भुजा दरशाईजी ॥
शीश मुकुट कुंडल कल कानन भूषण वसन सुहाईजी ॥
शंख चक्र गदा अंबुज धारे शरद चंद्र छविछाईजी ॥
अद्भुत रूप देवकी देखो पतिसों अरज सुनाईजी ॥ १ ॥
चलहु पती अब शरण हरीके देखहु नैनन आईजी ॥
दंपति परमानंद मगनमन परे चरणमें धाईजी ॥
भयो प्रेम आनंद दुहुनके रह्यो हगन जल छाईजी ॥
बोले गदगद वैन हरीसों राखहु प्रभु शरणाईजी ॥ २ ॥
दोहा–प्रभु तुम गुण किहिं विधि कहूं, तुम माया विस्तार ॥
निगम नेति जिहिं गावही, शेश न पावत पार ॥
चौबोला–शेश न पावत पार हरीकी भ्रूविलास अनयासाजी ॥
अखिल लोक उपजावत क्षणमें करतबहुरि तुम नाशाजी ॥
जो स्वरूप मुनि ध्यान लगावै परत नहीं कहुँ भासाजी ॥
जो सबते पर अज अविनाशी सो किम उदर निवासाजी ॥१॥
तात मातके वचन सुने तब बोले सारंगपानीजी ॥
सुनो मात मैं कहूं कथा सब पूरब जन्म कहानीजी ॥
तुम समान सुत होय हमारे तपकर तुम मन आनीजी ॥
सोमैं वचन दियो तब तुमको ता हित लीला ठानीजी ॥
दोहा–शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, ध्यान सकत नाहिं पाय ॥
सोमैं तुम्हरे प्रेमवश, दियो दरशनिज आय ॥
चौबोला–दियो दरशनिज आय हरीनें निजमाया फइलाईजी ॥

महा मोह उपजाय दुहुन सों कहत हरी सुखदाईजी ॥
करहु तात अब वेग उपाई नृपतें लेहु बचाईजी ॥
गोकुल हमींह देहु पहुँचाई यशुमति कन्या जाईजी ॥ १ ॥
मोहिं राखियो यशुमतिपाई कन्याको लै आनोजी ॥
सो कंन्याले कंसहिदीजे मोहिको नाहिं बतानोजी ॥
ऐसे मात पिता समुझाई कियो रूप शिशु नान्होजी ॥
देखिचरित सुन श्रीहरि केरे मात पिता सुत जानोजी ॥ २ ॥

दोहा—सुत उठाय उर लाइयो, हगनरह्यो जलछाय ॥
कहत देवकी सुनहु पति, दे गोकुल पहुँचाय ॥

चौबोला—देगोकुलपहुँचायजबहिंलगि सुनींह न कंस दुखारोजी
मन वच क्रम नृपको पति कबहूं करिये नाहिं पत्यारोजी ॥
धीरज धरैं कवन विधि इतनो नाहिंनभाग्य हमारोजी ॥
जो ये बालक बचहि कंसते रहिहै सुयशतिहारोजी ॥ १ ॥
सोचति विकल कंस भय जननी निरखति कुँवर कन्हाईजी॥
अति अँधियारी अर्धनिशा है भट घेरे चहुँ घाईजी ॥
पाँयन परे निगड अति भारे कौन भांति तहां जाईजी ॥
घनगरजत चमकतहै चपला बरषत जल झर लाईजी ॥ २ ॥

दोहा—विकल भई सोचत अतिहि, सुमिरत यमुना नीर ॥
कहा करों कासों कहूं धरों कवन विधधीर ॥

चोबोला—धरों कवन बिधधीर कंसने तबहीं क्यों नींह मारीजी
ऐसो सुत बिछुरत माता सों क्यों जीवै दुख भरीजी ॥
आतुर वचन सुने माताके भक्तनके हितकारीजी ॥
दीनो सोचमिटाय चरणते गिरे निगड तिहिं ठारीजी ॥ १ ॥
तब वसुदेव हरषि संकल्पी लक्ष धेनु मन माईजी ॥
पुत्र गोदलै तुरत सिधारे पाये द्वार खुलाईजी ॥ २ ॥

रखवारे सोवत सब देखे सिंह चले हरषाईजी ॥
तबहीं मघवा वृष्टि निवारी मंद समीर सुहाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरिमुख चंद्र प्रकाश सम, क्षण क्षण पंथ लखाय॥
शेशनाग छाया किये, सिंहदहाडत जाय ॥
चोबोला—सिंह दहाडत जाय चरित सो वसुदेवहु नहिं जानाजी
पहुँचे जाय यमुनतट देवा जगत ईश भगवानाजी ॥
सरित देखि गंभीर अतिः तब मन में संशय आनाजी ॥
गोकुलके सन्मुख पग दीनो हरि प्रताप धर ध्यानाजी ॥ १ ॥
यमुना पति पहिंचान आपनो अति मनमें सुख पायोजी ॥
परसन हित पद प्राणपतीके ऊंचो सलिल चढ़ायोजी ॥
गुल्फ जंघ कटिलौं जल आयो हरिको ऊर्ध्व उठायोजी ॥
ज्यों ज्यों सुत वसुदेव उठावत त्यों जल ऊपर आयोजी ॥२॥
दोहा—नासालौं पहुँच्यो सलिल, दीनो पद लटकाय ॥
परसिनीर हुंकारदै, भयो गुल्फ सम आय ॥
चौबोला—भयो गुल्फ सम आय पारह्वै नंद धामपर आयेजी ॥
तहां सकल जन सोवत देखे यशुमति ढिग पौढायेजी ॥
कन्या तहां पुनीत निहारी सो उठाय लैधायेजी ॥
फिर फिर सुतको वदन निहारत चले कंस भय पायेजी ॥ १ ॥
जो संपति निगमागमगाई योगी जन नहिं पाईजी ॥
सनकादिकके सब विधि प्राना शंकर ध्यान लगाईजी ॥
शारद नारदादि यश गावैं शेश रहत रटलाईजी ॥
अहो विलोकहु भाग्य बड़ाई सो यशुमति गृह आईजी ॥ २ ॥
दोहा—वहां देवकी प्रेम वश, अति व्याकुल अकुलात ॥
बालक अरु वसुदेवको, पठये बहु पछितात ॥
चोबोला—पठये बहु पछितात देवकी उठ बैठत अकुलानीजी

बोल सकत नहिं कंसासुर भय मोचत नैनन पानीजी ॥
मत यह भेद दई कोउ जाने सुरन वीनती ठानीजी ॥
मत कोउ दुष्ट मिले मगमाई रखवारे कोउ जानीजी ॥ १ ॥
क्यों दुरि है शशि मुख उजियारी यहै सोच जिय धारीजी ॥
किहि विधि पहुंचैंगे वह पारी मगमें यमुना न्यारीजी ॥
गोकुल पहुँचे धौं मगमाई भई अब अधिक अबारीजी ॥
यहि विधि सोच विवस अकुलाई इक क्षण युगते भारीजी॥२ ॥

दोहा–तब पहुँचे वसुदेवजी, बूझति सुत कुशलाय ॥
किहिं विधि बालक राखियो, कहो मोहिं समुझाय ॥

चौबोला–कहो मोहिं समुझाय सुनतही कन्या तुरत दिखाईजी ॥
द्वारकपाट लगे सब आपहि वेरी पगमें आईजी ॥
कन्या रोय उठी तिहिं काला सो सबहिन सुन पाईजी ॥
सुनताहि तब व्याकुल उठ धाये कह्यो कंससों जाईजी ॥ १ ॥
सुनत उठ्यो व्याकुल चल आयो लियो खड्ग कर भारीजी ॥
तब सो कन्या बहन देवकी आगे आनि निकारीजी ॥
अहो भ्रात यह दान दीजिये मांगत गोद पसारीजी ॥
याते मृत्युः नहीं तुम्हारी मानो बात हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा–भगनीकी वाणी सुनी, मृत्यु त्रास शठ मान ॥
यामें छलकछु होयतो, विधना गति को जान ॥

चोबोला–विधना गतिको जान कंस तब रिपुसमकन्याचीनीजी॥
कर गहि पटकन मनहिं विचारी सटक स्वर्ग चलदीनीजी ॥
दिव्य रूप तहां कियो प्रकाशा बहुरि कंससों कीनीजी ॥
अरे मन्दमति अधम अज्ञानी ममहत्या क्यों लीनीजी ॥ १ ॥
तेरोरिपु प्रगट्यो ब्रजमाई तैं मोहिको क्यों मारीजी ॥
आयो काल निकट शठ तेरो यों कहि स्वर्ग सिधारीजी ॥

परयो देवकी चरणनजाई भयो सोच मन भारीजी ॥
मैं मारे तुम पुत्र वृथाई क्षमाकरो वहि नारीजी ॥ २ ॥
दोहा—विनतीकरि वसुदेवकी, दीने निगडकटाय ॥
भयोसोच व्याकुल अतिः, परयो सेज पर जाय ॥
चौबोला—परयोसेजपर जाय जगतही बीतगई निशिसारीजी ॥
नींद नहीं आई ताकोक्षण भयोसोच अति भारीजी ॥
असुर विमोहन सुर सुखदायक हरिके चरित अपारीजी ॥
परत नहीं भवकूप प्रेमते गावहिं नर कोऊ नारीजी ॥ १ ॥
यशुदा जब सोवत ते जागी सुतकी वोर निहारीजी ॥
देख रही मुख शशि उजियारी उर आनन्द अपारीजी ॥
गदगद कंठ नः कछु कहि आवत हरषि रही नँदनारीजी ॥
आवहु कंथ पुत्र मुख देखो भाग्यवंत तुम भारीजी ॥ २ ॥
दोहा—सुने वचन नंद नारिके, आनँद उर न समाय ॥
ताक्षण नँदको सुख भयो, शारद सकहि न गाय ॥
चौबोला—शारद सकहि न गाय हरषिके नंद भवनमें आयोजी
तब यशुदा रानीने अपने सुतको बदन दिखायोजी ॥
जानत नहिं हमको किहिठाई उर आनंद बढायोजी ॥
रोय उठे तब नँदके लाला ब्रज बासिन सुन पायोजी ॥ १ ॥
जित तित ते हरषित उठ धाये धन लूटनमनु आयेजी ॥
देत बधाई नंदमहरको लागत यशुमत पायेजी ॥
कहत लालको हमहिं दिखावो यशुमति सबन दिखायेजी ॥
अति हरषित नँदराय कह्यो अब करहु आनँद बधायेजी ॥२॥
(लावनी)कह्यो करहु आनंद बधाये अति हरषित मन नदये ॥
लगी बधाई बजन घरन घर सब नारिन मंगल गाये ॥
टेक ॥ सुर सिध मुनि सब परम अनंदे मुनिं गोकुल हरि आयेहैं॥

दुंदुभि बजावत मंगल गावत तियन सहित उठ धायेहैं ॥
विद्याधर किन्नर सु घर कंठ बर करत गान सचुपायेहैं ॥
गर्जत तिहिं काला मधुर रसाला घनिगति जतन जनाये हैं ॥
बाजत करताला बरषित माला सुरतरु सुमन सुमन भाये ॥
लगी बधाई० ॥ १ ॥
सब करत किलोलैं हरषित बोले जे जे कहि सुख पाये हैं ॥
नभ महँध्वनि होई सो तो सुनि सब कोई भये सकलमन भायेहैं
संतन हितकारी असुर संहारी आवत क्षण सुख छायेहैं ॥
शिव ब्रह्मादिक सनकादि मुनीजन प्रफुलित गात सुहायेहैं ॥
गुण गावत गोविंदहरीके मनमें अति आनँद छाये॥लगीबधा०२
आनँद उर न समात भये सब मनचीते हरि ब्रज आये ॥
अति मनहरषे पुनि पुनि बरषे सुमनझरी नभ सुर लाये ॥
सुरतिय निरखि सिहात कहत मन यशुमति भाग्य बड़े पाये ॥
इन सम नाहीं सकल हम यों कहि प्रेमानँद छाये ॥
योगी जनकर योग विरागा ध्यावें ध्यान नहीं आये ॥
लगी बधाई० ॥
धन्य यशोमाति भाग्य तिहारो तियन सहित नभ सुरगावै ॥
वेद न जानें नीति बखानें सो सुतकर उरसों लावै ॥
भरे प्रेम आनंद सकल सुर लखि हरि छबि मन सुख पावै ॥
बारहिं बार कहत सब यशुमाति तेरी भाग्य न कहि आवै ॥
प्रगटे गोकुलचंद हरिःसो लखि विहार जन सुख पाये ॥
लगी बधाई वजन घरन घर सब नारिन मंगल गाये ॥ ४ ॥

दोहा–गोकुलको उत्सव निरखि, रहे सदन सब भूल ॥
ब्रजवासी हरषित सकल, जन्मे मंगल मूल ॥

चौबोला—जन्मे मंगल मूल सकल ब्रज वासिनने सुन पायेजी॥
नंद महर घर बजत बधाई यशुमति ढोटा जायेजी॥
परमानंद मगन सब आये तब नंद द्विजन बुलायेजी॥
अति विचित्र सब द्विजन सुनाये लग्न घरी शुभ आयेजी॥१॥
देहि नंदको सकल बधाई वेदन ध्वनी सुनाईजी॥
तब असनान महर उठ कीनो लीनो चंदन लाईजी॥
जाति कर्म करि पितृ जिवाये भूषण वसन सजाईजी॥
गैया बाढी दूध मंगाई लक्ष वत्स समुदाईजी॥२॥

दोहा—सकल अलंकृत साजिकै, दई लक्ष नँद गाय॥
जविहुकोटिन वरस सुत, कह्यो द्विजन समुदाम॥

चौबोला—कह्योद्विजनसमुदाय प्रीतिकरिबहुरिमहरनंदरायाजी॥
हित कुटुंब सब निकट बुलाये सुनत सकल चल आयाजी॥
भूषण वसन सबन पहिराये चंदन भाल लगायाजी॥
हुते जो कुलमें वृद्ध जिठेरे तिनको शीश नवायाजी॥१॥
वंदी मागध सूत गुणनके भरे भवन बहु आयाजी॥
परतोसे सबको नँदराई लैलै नाम बुलायाजी॥
नंद भरे रस देत सबनको याचक अयिच करायाजी॥
मन वांछित सब लेत नंदसों जो जाके मन भायाजी॥२॥

दोहा—सुनि सुनि धाई ब्रज तिया, लेकर कंचन थार॥
मंगल साज सजायके, कीने सुभग शृंगार॥

चौबोला—कीने सुभग शृंगार उमंग मन अंजन दृगन लगाईजी॥
मांग सिंदूर तरौना कानन रोरी रंग सुहाईजी॥
अंगिया अंग कसी अरु उर बिच विविध हार छवि छाईजी॥
अति आनंद मगन मन फूली अंचल उडन भुलाईजी॥१॥
निज निज मेल मिली सब गावैं नंद धाम पर आईजी॥

इक भीतर इक आंगनमाई द्वार भीर अतिछाईजी ॥
मुख उघार सुतको दिखरायो यशुमति निकट बुलाईजी ॥
जीवहु जबलगि नभतारागण दै अशीश सुख पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सफल भयो ब्रज देश सब, धन्य यशोमति माय ॥
धन्यकोखि जहां राखियो, पुण्य कह्यो नहिं जाय ॥
चौबोला-पुण्य कह्यो नहिं जाय यशोदा धनिधनिभाग्य तिहाराजी
धन्य दिवस धनि लग्न रात यह धन्य घरी धनि बाराजी ॥
जहां जायो ऐसो सुत तुम यह थिर थाप्यो परिवाराजी ॥
देहिं अशीशमनाय सुरनको जीवहु नंदकुमाराजी ॥ १ ॥
परमानन्द नन्द अनुरागे लीने बसन मँगाईजी ॥
सारी सुरंग कुसुमको लहँगा मोल कहे नहिं जाईजी ॥
सिगरी बधू बोलि पहिराई जो जाके मन भाईजी ॥
फूली कमल कली सी सारी दे अशीश हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा–एक हर्षि गृहको चली, एकनंद ग्रह आत ॥
एक कहत है एकसों, भली सुनीमैं बात ॥
चौबोला–भली सुनी मैं बात महर यशुदाने ढोटा जायोजी ॥
नंद द्वार सखि बजत बधाई भयो सबनमन भायोजी ॥
चलें वेगि सखि देखिये सोई मन अति हरष बढ़ायोजी ॥
इकनाचत इक ढोल बजावत एकन मंगल गायोजी ॥ १ ॥
एक साथिया द्वार बनावे गारि महरको गाईजी ॥
ध्वज पताक तोरंन छबिछाई बंदनमाल बँधाईजी ॥
पुनि पुनि सुमन देव बरषावत फूलन गोकुल छाईजी ॥
घर घर मंगलचार भये हैं विहारन बाले बलि जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–बरन सके सो कौन कवि, नंद सदन सविचार ॥
छबिसागर त्रिभुवन धनी, लियो जहां अवतार ॥

चौबौला—लियो जहां अवतार हरीने ग्वाल वृन्द तहां आयेजी ॥
चित्र विचित्र अंग सब कीने गुंजामाल बनायेजी ॥
भूषण और अमित अंगमाई अहिरन गुंज सुहायेजी ॥
एक कहत एकन समुझाई आज बनहिं नहिं जायेजी ॥ १ ॥
सुरभिन गेरू रंग लगाये झूलन साज सजाईजी ॥
पूत नंदके घरहै जायो भई सबन मन भाईजी ॥
वेगि चलौ बानि सहित समाजा कत अब गहर लगाईजी ॥
दधि माखनके माट भराये कछु यक हरदि मिलाईजी ॥ २ ॥

दोहा—केतिक गावत रागनी, ताल मृदंग बजाय ॥
निरखत नंदकुमारको, मिल मिल यूथ बनाय ॥

चौबोला—मिलमिलयूथबनायदेखिअतिनंद मगन मन माईजी ॥
हँसि हँसि सबके निकट बुलावत सुतहि दिखावत जाईजी ॥
देहिं बधाई अति अनुरागे आगे भेट रखाईजी ॥
मगन भये सब देखि श्यामको रही देह सुधि नाईजी ॥ १ ॥
मानहु उत्सव गोप शरीरा धरे रूप सब आवैंजी ॥
देह धरे आनंद मगनमन नन्द महर दरशावैंजी ॥
जन्मे आनँद कन्द कहत सुख सहसहु मुख नहिं पावैंजी ॥
इक नाचत इक गावत ठाढे इक कूदत छबि छावैंजी ॥ २ ॥

दोहा—दधि माखन छिरकत फिरैं, एकन एकहि जाय ॥
बर्षत भादौं मास सम, गोकुल कीचमचाय ॥

चोबोला—गोकुलकीचमचाय गोप सब इक आवत इक जाईजी ॥
एकन डारि मिलत गलबांई एकन पकरत धाईजी ॥
एकन दूध दही शिर ढोरैं एकन लागत पाईजी ॥
राजा रंक गिनत कछुनाई अति आनँद मन माईजी ॥ १ ॥
करत गोप कौतूहल जित तित गोकुल मध्य प्रवीनोजी ॥

१ कंगाल। २ तमासा। ३ चतुर।

एकन लूटि नंदको लीना तिन औरनको दीनाजी ॥
एकन बोल नंदजी देहीं भूषण वसन नवीनाजी ॥
एक कहत मोहिं लाल दिखावो जिन ब्रजमें सुख कीनाजी॥२॥
दोहा—एक एकते लेत हैं, ते औरनको देत ॥
नृत्यत अति आनंद मन, बृद्धबाल सबजेत ॥
चोबोला—बृद्ध बाल सब जेत ग्वाल सब अति उदार मनमाईजी॥
गोकुलको आनंद भयो सो कापै वरण्यो जाईजी ॥
जहां परम आनंद मयश्री लियो जन्म हरि आईजी ॥
नितनव होत विलास हरी मुख निरखत लोग लुगाईजी ॥ १॥
ब्रज संपति सुख देखि भूलि रहे सुर मुनि अरु ऋषि राईजी ॥
जब ते जन्म लियो हरि आई सुख संपत ब्रज छाईजी ॥
हिय उदार सब परम प्रवीना रोग रह्यो नाहिं राईजी ॥
मुदित जहां तहँ सब ब्रजवासी हरिसों प्रेम लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—नन्दसदन[1] महिमा अमित, लखि सुरेशैं[2] भ्रम जाय ॥
अति प्रकाश मंदिर रह्यो, फैल रही छबिछाय ॥
चोबोला--फैलरही छबिछाय गाय अरु गोपनकी अति भीराजी॥
कहुँ दधि कहुँ माखन कहुँ मेवा कहूं दूध कहुँ खीराजी ॥
खग मृग सर सरिता कमनीयाँ[3] भूमिगिरी सुख सीराजी ॥
बेली विटप फूल फल सहिता सरवर निर्मल नीराजी ॥ १ ॥
मंगल मूल भयो ब्रज सारो सुरभी सुर समुदाईजी ॥
कृष्ण जन्म आनंद बधाई तिहुँ पुरमाई छाईजी ॥
ब्रजवासिन मन अधिक उछाहा अति आनंद मन माईजी ॥
ब्रजको सुखकोसकै बखानी सुखनखानि जहां आईजी ॥ २ ॥
दोहा--सन्त कुमुदबन मोदकर, प्रगटे गोकुलचंद ॥
ब्रज जन चारु चकोर हित, तुम कुल असुर निकंद ॥

१ घर। २ इन्द्र। ३ सुंदर।

चोबोला-तुम कुल असुर निकंदनन्दके धामअमितसुख छायोजी
याचक जन सब होत सुखारे नाना बिध यश गायोजी ॥
गाँव गाँवते सुन सुन आवत मन भायो सब पायोजी ॥
पांच दिवस इहि बिध सुख पायो छठौ छठीको आयोजी ॥१॥
मंदिर सकल सुबास लिपायो जहां तहां चित्र कराईजी ॥
भीती चारु सुगंध सिंचाई बंदनवार बँधायेजी ॥
जाति कुटुम्ब मित्र हितु जेते तेसब न्योत बुलायेजी ॥
रोहिण्यादि सब करत रसोंई ब्यंजन विविध बनायेजी ॥ २ ॥

दोहा—बनि बनि आवत ब्रज तिया, लालनको पहराय ॥
कुरता टोपी जरकसी, रत्न प्रेमलगाय ॥

चौबोला—रत्न प्रेमलगाय धरी सब कंचन थारनल्याईजी ॥
रोरी अक्षत पान मिठाई मंगल साज सजाईजी ॥
गावहिं मंगल कोकिल वाणी नन्द भवन पर आईजी ॥
करि आदर यशुदा बैठावत देखि श्याम सुख पाईजी ॥ १ ॥
वृषभानादिक गोप जितेका ब्रजवासी समुदायेजी ॥
आये नन्द महरके धामा भूषण बसन सजायेजी ॥
अति आदरकर नन्द सबनको आसनपर बैठायेजी ॥
सबके मन आनन्द नचत नट लखि हरि मुख सुख पायेजी॥२॥

दोहा—कहूं ग्वाल गावत कछू, गायन साज सजाय ॥
वंश प्रशंसा भाट कहि, ढाढ़ी ढाढ़िन गाय ॥

चौबोला—ढाढ़ी ढाढ़िन गाय गोप गण देत तिन्हैं बहु दानाजी ॥
भूषण वसन धेनु मन माना हय गज रथ विधि नानाजी ॥
परजा सकल खिलौना ल्यावैं छबि नाहिं बनत वखानाजी ॥
धरहिं नन्दके आगे आनी राखत सब सुख मानाजी ॥ १ ॥
तिन्हें देत न्यवछावर हरिकी भरे प्रेम नँदराईजी ॥

विश्वकर्मा पलना गढिल्यायो जडे रत्न तामाईजी ॥
लागे विविध खिलौनाजामे देखत भूख नशाईजी ॥
विश्वकर्मा मनवांछित पायो लीनो नन्द रखाईजी ॥ २ ॥

अथ कुरता टोपी वर्णन लीला ॥

दोहा—तब सब गोपन नंदजी, हित सों दिये जिमाय ॥
छिरकत नाना अरगजा, दीने पान खवाय ॥

चौबोला—दीने पान खवाय तबै मंगल मय रजनी आईजी ॥
गाय उठीं सब नारि सुहाई आनँद मंगल बधाईजी ॥
कुरता टोपी पीतरंग सजि लालनको पहराईजी ॥
लै उछंग पूजन छठि बैठी हरषि यशोमति माईजी ॥ १ ॥
करि कुलको व्यवहार आरती हरिकी मांत उतारीजी ॥
करत नोछावर नारि सकल मिल तन मन डारत वारीजी ॥
नेग जोग नेगिन मन भायो देत नंदकी नारीजी ॥
प्रात न्हवाय लाल पलना पर पौढाये सुखकारीजी ॥ २ ॥

दोहा—अरुण चरण कोमल अतिहि, निरखत यशुमति माय॥
मात सुकृत फल अवतरे, ब्रजवासिन सुखदाय॥

चौबोला—ब्रजवासिन सुखदाय हरीके नितनव मंगल होईजी ॥
मंगलनिधि जब ते हरि आये रहत सुखी सब कोईजी ॥
नंद सुकृत वर्षाऋतु जानो यशुमति बादर सोईजी ॥
मंद हँसन दामिन सोई मानो श्याम घटा हरि जोईजी ॥ १ ॥
ब्रज जन मोरन आनँद कारी गरज मधुर किलकारीजी ॥
दादुर गुण गावहिं सब दासा परम प्रीति उर भारीजी ॥
पलना पचरंगी छबिछाई इंद्र धनुष उपमारीजी ॥
गजमुक्तनकी लर लटकारी सो मनु जलकी धारीजी ॥ २ ॥

दोहा—ब्रज घर घर संपति भई, सोइ भूमि हरियाहिं ॥
बरषत परमानंद जल, नंदभवनके माहिं ॥
चौबोला—नंद भवनके माहिं हरीजन यह विधि प्रेम बढायाजी ॥
ध्यान भूमि दृग मग सरिता सब जन उर सिंधु समायाजी ॥
यद्यपि निशि बासर भरपावत पूरण होन न पायाजी ॥
हरि मुख शशि राका निरखत सब बढ़त लहर पुलकायाजी॥ १ ॥
कंसहि वहां नींद नाहिं आई अति चिंता मनमाईजी ॥
बैठ्यो निकसि सभा उठ प्राता लीने मंत्रि बुलाईजी ॥
मेरो रिपु प्रगट्यो ब्रज माईं किमि पहिचान्यों जाईजी ॥
जाते जाय वेगि तिहिं मारो सो कछु करहु उपाईजी ॥ २ ॥
दोहा—बड़ो होय दिन दिन बढ़ै, मेरो रिपु है सोइ ॥
करहु यत्न शीघ्रहि कछू, कोजाने कहां होइ ॥
चौबोला—कोजाने कहां होइ सुनत इक बोल्यो सन्मुख आईजी ॥
किमि डरपत इतनेके काजा असुरनके तुम राईजी ॥
धर्मकाज होवन नाहिं दीजै होम होन नहिं पाईजी ॥
विप्रन साधन असुर सतावै ताहि न परहि पचाईजी ॥ १ ॥
जो वह देव होयगो सो तब आप प्रगट ह्वैजाईजी ॥
तब कोउ जाय असुर तिहिंमारै याविधि शत्रु नशाईजी ॥
एक कह्यो सुन हो महाराजा मोमनमें यह आईजी ॥
देश देशको असुर पठावो बालक रहन न पाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तिन सबहिनको वध करै, वचन न पावहि कोय ॥
इनहींमें वह होयगो, मारचो जैहै सोय ॥
चौबोला—मारचो जैहै सोय सुनतही कह्यो कंस हरषाईजी ॥
कहे मंत्र यह दोऊ नीके पठवहु असुर निकाईजी ॥
सँभरि करौ कारज सब जावो दीने असुर पठाईजी ॥

कह्यो जाउ ब्रजमें अब कोऊ बालक मारो जाईजी ॥ १ ॥
कह्यो पूतना आयसुपाऊँ मैं कारज करआऊँजी ॥
सकल घोश शिशु जाय नशाऊँ कहोतो जीवत लाऊँजी ॥
घसि कंकोल उरोजन लाऊँ बालक जाय पियाऊँजी ॥
वशीकरण पढ़ि सबपर डारों मोहनि रूप बनाऊँजी ॥ २ ॥

दोहा—नृपको कारज मैं करौं, तबहिं पूतना नाम ॥
तुरत कंस आयसु दियो, जा तू गोकुल गाम ॥

चौबोला—जा तू गोकुल गाम ताहि दिन नन्द मधुपुरी आयेजी ॥
राज अंश कछु नृप पहिंल्याये सोनृप द्वार पठायेजी ॥
समाचार बसुदेवके पाये सुनि मन हरष बढायेजी ॥
छोर बंदिते नृप तिनराखे मिलन चले हरषायेजी ॥ १ ॥
मिलन गये तिनको नंदराई मिले डारिगलबांईजी ॥
कुशल पूँछ करि वारंवारी अतिशय प्रीति बढाईजी ॥
करिकै आदर रीत प्रेम सों बैठारे नंदराईजी ॥
तब बोले नंदराय सुनो हो हरि गति जानि न जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनो देव भावी प्रबल, तासों कछु न बसाय ॥
जगत भ्रमत जाके विवस, सो गति लखी नजाय ॥

चौबोला-सो गति लखी नजाय तुमहुँ अति कष्ट कंसते पायोजी।
सुनि सुनिकै अति भये दुखित मन भयो बहुत पछितायोजी ॥
आजु देखिकै चरण तिहारे नैननको सुख छायोजी ॥
सत्य वचन तुम कह्यो नंदजी यों वसुदेव सुनायोजी ॥ १ ॥
कर्म रेख नहिं जात मिटाई विधि सों नाहिं बसायोजी ॥
सुन्यो नंद सुत भयो तुम्हारे सुनि अति मन सुख पायोजी ॥
तुमको जरा आय नियराई वृद्ध बैस सुत पायोजी ॥
तब नँद हलधर जन्म सुनायो प्रथम रोहिणी जायोजी ॥ २ ॥

दोहा—कंस त्रास उरमें धसौ, उत्सव कियो दुराय ॥
सुख पायो वसुदेव सुनि, कह्यो वचन समुझाय॥

चौबोला—कह्यो वचन समुझाय सुनहु नंद यह तुमनीके जानोंजी
कंस नृपति कृत है जगमाई सो कछु नाहिं छिपानोंजी ॥
ताते अब वे बालक दोऊ अपने करि तुम मानोजी ॥
अब तुम बेगि जाहु गोकुलको बालक नाहिं पत्यानोजी ॥१॥
जित तित भेजे असुर कंस के करत उपद्रव भारीजी ॥
प्रजा लोगके बालक पावत सो सब डारत मारीजी ॥
गई आज ब्रज माहिं पूतना बालक घातन हारीजी ॥
ताते वेग सदन तुम जावो करिये नाहिं अवारीजी ॥ २ ॥

अथ पूतना वध लीला।

दोहा—वचन सुनत वसुदेवके, चले नंद अतुराय ॥
निकसतशकुनभले नहीं,भये सोच वशआय ॥

चौबोला—भये सोच वशआय नंदकेकछु यकसुधि तनमाईजी ॥
क्षिप्रचले चिंता बालककी सोचत मन मग जाईजी ॥
यहां पूतना ब्रजमें आई मोहनि रूप बनांईजी ॥
ऊपर सुभग शृंगार बनायो गरल कुचन लपटाईजी ॥ १ ॥
अतिही कपट छबीली सोहै देखत ब्रज जन आईजी ॥
इत उत है नँद धामहिं आई यशुमतिके मनभाईजी ॥
देखिरही मुख सुन्दरताई नरकै सुरकी जाईजी ॥
काकीवधू कौनकी बेटी ब्रजमें कबु न लखाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हौं आई सुत देखने, लागत तुम्हरे पाय ॥
बिनजाने आदर कियो, आसन पर बैठाय ॥

चौबोला—आसन पर बैठाय लखत हरिपलना पर मुसकाईजी ॥

ताही समय यशोदारानी कछु गृहकाज सिधाईजी ॥
तबहिं राक्षसी दुष्ट मतीसो पलनाके ढिग आईजी ॥
निरखि बदन मुख चूम हरीको लीनो गोद उठाईजी ॥ १ ॥
विष लपट्यो हरिके मुख स्तन दियो तुरत अतुराईजी ॥
लगे करन पय पान हरी तब पकरि दुहूँकर माईजी ॥
पय सँग प्राण लगे खींचन हरि भई सिथिल अकुलाईजी ॥
तब सो लगी छुड़ावन बालक सो अब छूटत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा–परी मृतक ह्वै असुरनी, तन इक योजनताय ॥
जननी गति ताको दई, दीनी स्वर्ग पठाय ॥

चौबोला–दीनी स्वर्ग पठाय यशोमति पलनाके ढिग आईजी ॥
पलना पर बालक नाहिं पायो त्राहि त्राहिकर धाईजी ॥
सुनत सकल धाये ब्रजवासी ढूंढत ब्रजमें जाईजी ॥
ढूंढत श्यामहि रोवत भारी व्याकुल यशुमति माईजी ॥ १ ॥
हरिताकी छाती लपटाने करत चरित असुरारीजी ॥
ढूंढत ढूंढत उरपर पाये लिये उठाय म्हतारीजी ॥
जिमि मणि गई भुवंगन पाई दुख सुख ताको भारीजी ॥
कहति बच्यो अति नंदको लाला सुखित भई ब्रजनारीजी ॥२॥

लावनी–भाग्यवंत दोऊ अति भारी नंद यशोमति महतारी ॥
बच्यो कन्हाई आज यह विधनाने करवरटारी ॥
टेक–अद्भुत रूप बना यह आई अतिहि छबीली बनि नारी॥
कपट खेल इन रच्यो ताहिते विधनाने याको मारी ॥
पुनि पुनि सबके पाँयन परिं परि कहति यशोमति महतारी ॥
तुम पंचनके पुण्य दयाते बच्यो कान्ह याते भारी ॥
अतिही कष्ट कुँवरने पायो कहि यशुमति बारं बारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥ १ ॥

कुलके देवन करी सहाई विधना बहुत बचायो है ॥
कोऊ कहत नँद भाग बडेरे पुण्य न जात गिनायो है ॥
कोऊ कहत नेक सुत देरी ले उछंग सुखपायो है ॥
चूम बदन अरु लेत बलाई यशुमतिपै पहुँचायो है ॥
तबहिं नंद गोकुलमें आये देखि बेकी डरपे भारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥ २ ॥

जो वाणी बसुदेव सुनाई सो सबही सांची पाई ॥
तहां ब्रजबासी जुरे इखटे पूछौ तिनसों नँदराई ॥
तिन सब कियो बखान सुनतही सदन गये तब नँद धाई ॥
देख्यो श्यामहिं निरखिकै तब कछु मन समता आई ॥
बदन विलोकि. हरषि उर लाये तब नँद मन धीरज धारी ॥
बच्यो कन्हाई० ॥

बहुत दान हरि हाथ दिवायो अति मन हरषित नँदराई ॥
ब्रजबासिनको बुला वकींके दिये अंग सब कटवाई ॥
बाहिर एक ठौर सबकीने तब अग्नी तामें लाई ॥
अति सुगंध ता अंगते निकरी सो सगरी ब्रजमें छाई ॥
हरिहि परसि उत्तम गति पाई रहे अचंभव नर नारी ॥
बच्यो कन्हाई आज यह विधनाने करवर टारी ॥ ४ ॥

दोहा—नन्दसुवन महिमा सुनत, चरण कमल चितलाय ॥
हरि रोये तब गोदमें, दूध पियायो माय ॥

चौबोला—दूधपियायो माय हरीको पलना माहिं सुवावैजी ॥
हुलरावै दुलराय झुलावै बहुविधिलाडलडावैजी ॥
लालनके हित नींद बुलावै मधुरे सुर कछु गावैजी ॥
रीलालनको आव निदरिया तोहिंको श्यामबुलावैजी ॥ १ ॥

१ गोद । २ पूतना ।

अहो देवता या कुल केरे सेवाकरों तुमारीजी ॥
जो कर कपट वकीलों आवै लीजो लाल उबारीजी ॥
वेगि बडो करदेहु विधाता प्राण पूतना हारीजी ॥
सोवत मेरो लालकन्हाई माता तन मन वारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सोवत देखत मौन गहि, जागतते कछु गाय ॥
अंग फरकावत मगन मन, ताछबिको को पाय ॥

चौबोला—ताछविकोको पाय हरी मुखनिरखत कर मन मोदाजी॥
यशुमति अपनो भाग्य विचारत लेत प्रेमकर गोदाँजी ॥
हुलरावत गावत मधुरे सुर हरिके बाल विनोदाजी ॥
जोसुख सुर मुनिकोउन पावत सो सुखलेत यशोदाजी ॥ १ ॥
उरलगाय चूमति मुख हरिके कबहुँकलेतं उछंगाजी ॥
कबहुँ झुलावत पलना माहीं निरखि मनोहर अंगाजी ॥
दरशनको नित सुर मुनि आवैं तियन सहित लिये संगाजी ॥
कहत परस्पर सुर नरनारी हरिके अद्भुत रंगाजी ॥

दोहा—अलख अगोचर अजहरी, पुरुष पुरातन जान ॥
भेद न सुर मुनि कहिसकै, ब्रह्मावेदवखान ॥

चौबोला—ब्रह्मा वेद वखान ताहिको हुलरावत महतारीजी ॥
पूरण भई पुरातन करनी भाग्यवंत अति भारीजी ॥
मन अभिलाष बढावत हरिसों हँसत देत किलकारीजी ॥
बरषि प्रसून देव यह भाषत धन्य नंदकी नारीजी ॥ १ ॥
यशुदा नित नव लाड लडावै ब्रज जनको सुखकारीजी ॥
नितनव मंगल नंदके धामा नितनव रूप मुरारीजी ॥
जन कृपाल संतन हितकारी भक्तन हित तनु धारीजी ॥
रटत संत यह हृदय विचारी जन विहारन बलिहारीजी ॥ २ ॥

अथ कागासुर वध लीला ॥

दोहा—जब हरि मारी पूतना, सुनि डरप्यो नृप कंस ॥
प्रगट भयो ब्रज शत्रुमम, यह जानी निःसंस ॥

चौबोला—यह जानी निःसंस ताहि क्षण वस्यो हरिहि उर माईजी॥
शत्रु भाव लाग्यो भजने तिहिं विसरत इक क्षण नाईजी ॥
कागासुर नृप निकट बुलायो कह्यो ताहि समुझाईजी ॥
आवहु वेग नंद सुत मारी कीजे काज बनाईजी ॥ १ ॥
आयसुधरि शिर गर्व बढ़ायो कागहि रूप बनायोजी ॥
वेगवंत उड़ि गोकुल आयो प्रेरित काल नियरायोजी ॥
बैठ्यो नंदधाम पर आई सो हरिने लखि पायोजी ॥
ताको आवतही हरि जान्यो असुर कागवन आयोजी ॥ २ ॥

दोहा—लगी यशोमति काज गृह, हरिको सोवत जानि ॥
गयो असुर पलना निकट, चोंच चलावत तानि ॥

चौबोला—चोंच चलावत तान तबै हरि पकरि लियो करमाईजी॥
नेक मरोर कंठ हरि ताको फेंक दियो नृप पाईजी ॥
पर्यो जाय नृप पास उतानो ब्रजजन जान्यो न कोईजी ॥
तुरत कंस तिहिं बूझन धायो तब तिन नृपहि सुनाईजी ॥ १ ॥
सुनहु कंस वह बाल न होई प्रगट्यो है कोउ आईजी ॥
एक हाथसों पकरि मोहिं उन फेंक दियो इत माईजी ॥
ह्वैहै तुमरो काल अवशि वह यह मोहिं परत लखाईजी ॥
कागासुरके वचन सुने तब अति डरप्यो नृप राईजी ॥ २ ॥

दोहा—बाढ्यो सोच बिशाल तरु, जम्यो जु उरमें आय ॥
सभामध्य नृप असुर सो, शिर धुनि धुनि पछिताय ॥

चौबोला-शिरधुनिधुनिपछितायब्रजाहिमेंकालप्रगटभयोआईजी॥

ताके अबहींते यह हाला कागासुरहि सुनाईजी ॥
दनुज सुता पूतना पठाई इकक्षण माहिं नशाईजी ॥
कागासुरके ऐसे हाला सोदिन दिन बढ़िजाईजी ॥ १ ॥
है कोउ वीरसो ताहि नशावै मम कारज करआईजी ॥
ऐसो कौन कहूं मैं जासों अब तिहिं जाय नशाईजी ॥
असुरनको यों नृपति सुनाई शकटा गर्ब बढ़ाईजी ॥
उठिकै पान नृपतिसों मांगे मैं मारौं अब जाईजी ॥

दोहा—कहो तो सब ब्रज को हनू, तुम प्रताप ते जाय ॥
हर्षिकंस बीरादियो, बहु विध कहि समुझाय ॥

चौबोला-बहु विधिकहि समुझाय कंसने बिदाकियोब्रजआयोजी।
इहां श्याम पलना परखेलत पद अंगुष्ठ मुखनायोजी ॥
अपने मन यह करत विचारा यह संतन मन भायोजी ॥
इनको धोवन अतिहित शंकर अपने शीशचढायोजी ॥ १ ॥
इनको रसमन मधुर जानकर धरत निरंतर ध्यानीजी ॥
पुनि इन पदके ध्यान मगनमन ब्रह्मादिक मुनिज्ञानीजी ॥
लक्ष्मी अति सुखमानत इनसों रहत सदा उरआनीजी ॥
इनपद पंकजरस अनुरागी रहत सकल सुरमानीजी ॥ २ ॥

दोहा—ऐसोधों कहारस मधुर, यह विचार ठहराय ॥
इहरस दुर्लभ मोहि अति, देखों धौमैं ताय ॥

चौबोला—देखों धौमैं ताय ताहिते पद अंगुष्ठ मुख नायोजी ॥
लैलेस्वाद मगन रस खेलत तहँ शकटासुर आयोजी ॥
पवन रूप है गोकुल आयो काऊ नाहिं लखायोजी ॥
भारे शकट नंद घरकेरे सोतिन माहिं समायोजी ॥ १ ॥
तिन में सो शठ आय समायो नंदसुवनलखि पायोजी ॥
ताको हरि इकलात चलाई गिरो शकट घहरायोजी ॥

दनुज हतन काऊ नहिं जान्यो शकटहिगिरो लखायोजी ॥
सुनत शब्द धाये ब्रजवासी नंदहु आतुर आयोजी ॥ २ ॥
दोहा–सबके मन विस्मय भयो, यशुमतिं लीनो धाय ॥
पलना ढिग खेलत हुते, कछुक बाल तहँ आय ॥
चौबोला–कछुक बाल तहँ आय कह्यो पलनाते लात चलाईजी॥
सो न करी परतीत काहुने बालक बुद्धि बताईजी ॥
यह कछु अति विपरीत भई है उबरचो आज कन्हाईजी ॥
यशुमति अति मन मन पछिताई कीनो देवसहाईजी ॥ १ ॥
बारबार उरसों सुतलावै निरखि नंद सुख पावैजी ॥
मेरे निधनीके धन कान्हा माता बलि बलि जावैजी ॥
ऐसे बहु विध लाड लडावै पय पियाय पौढावैजी ॥
मन्द मन्दकर ठोंक सुवावै कछुक मधुर सुर गावैजी ॥ २ ॥
दोहा–सोये श्याम सुजान हरि, चौंकि चौंकि हगलाय ॥
लिये मात छतियां जिमि, फणि मणि उरग दुराय॥
चौबोला-फणिमणिउरगदुरायप्रातउठिनिरखिवदनसुखपायोजी।
चूमि वदन सुतको पय प्यायो आनँद उर न समायोजी ॥
कोमल धाम अजिरमें आयो सुत पलना पौढायोजी ॥
आप मथन दधि भवन सिधाई नंदहि ढिग बैठायोजी ॥ १ ॥
कमल वदन छबि रहे निहारी रहे नंद टकलाईजी ॥
चुटकी दे दे सुतहि खिलावत निरखि निरखि सुख पाईजी ॥
किलकि उठे लखि तात बदन हरि कर पद हग अतुराईजी ॥
झपटि झटकि उलटेपर सोये त्रिभुवनपति सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखि नंद टेरत महरि, सो छबि कही न जाय ॥
अतिकोमल तन सकुचिं मन, आप न सकत उठाय ॥

चौबोला—आप न सकत उठाय महरिको टेरत हैं नँदराईजी ॥
तजी तुरत दधि मथन मथानी शीघ्र तहाँ चलिआईजी ॥
जाने महिर गिरे सुखदाई ताते आतुर धाईजी ॥
नंदहि देखि हँसत सुतपासा तब धीरज मन पाईजी ॥ १ ॥
उलटि परयो सुत देखहु आई उठि नाहिं सकत कन्हाईजी ॥
सो छबि निरखि मात सुख पायो लीने तुरत उठाईजी ॥
उरलगाय मुख चूमनलागी आज शुभघरी आईजी ॥
डेढ मासके भये कन्हाई पिटकुरना उलटाईजी ॥ २ ॥

दोहा—चिरजीवहु मेरो कुँवर, करिहौं अनँद बधाइ ॥
नँदरानी सब ब्रजबधू, लीनी निकट बुलाइ ॥

चौबोला—लीनीनिकटबुलाय सुनतसबअतिआनँदकरधाईजी ॥
हरिको निरखि परम सुखपायो हर्षित मंगल गाईजी ॥
बांटी घर घर पान मिठाई यशुमति अतिसुखपाईजी ॥
धनि धनि ब्रजकी नारि सभागी बालचरित मन लाईजी ॥१॥
जननी अति आनंद मगन मन निरखत श्यामलगाताजी ॥
जैसे निधनी पाय महाधन मुदित रहतदिनराताजी ॥
धनि धनि ब्रजकोवास नंदधनि धन्य यशोमति माताजी ॥
रहत मगन या रसमेंतिनकी बिहरन बलि बलि जाताजी ॥२॥

अथ तृणावर्त बध लीला।

दोहा—धन्य यशोमति भाग्यतुम, त्रिभुवनपति सुतपाय ॥
पय प्यावत हरिगोदलै, बहुबिधि लाडलडाय ॥

चौबोला-बहुविधि लाडलडाय कबहुं हरिके मुख सों मुखलावैजी
कबहुं हरषित कण्ठ लगावै जिमि निधनी धनपावैजी ॥
खेलत हँसतरहो नित कान्हा कब मुख वचन सुनावैजी ॥

कब जननी कहि मोहिं बुलैहैं नंदबबा कहि आवैजी ॥ १ ॥
खेलत इत उत आंगनमाई घर बाहर फिर आवैजी ॥
अपने करते ले मुखमाई तनक तनक कछु खावैजी ॥
कब विधि यह अभिलाष पुरावै कुलके देव मनोवजी ॥
किलकत हरि यशुमतकी कनियाँ लखि जननी सुख पावैजी॥२॥

दोहा–तब पठयो नृप कंसने, तृणावर्त बलिजानि ॥
ताको आवतही लख्यो, लीनो हरि पहँचानि ॥

चौबोला-लीनो हरि पहँचानि मातपर भये श्यामअति भारीजी॥
सहि न सकी तब हरिको जननी दीनो भू बैठारीजी ॥
धनि धनि ब्रजकी भूमि सुहाई तहँ लीला विस्तारीजी ॥
आप लगी गृह काज यशोमति राखि अजिर सुखकारीजी॥ १ ॥
आयो असुर तबहिं गोकुलमें अतिशय धुंध उड़ायोजी ॥
तृणावर्त असुर महापापी वात चक्र मिस आयोजी ॥
अंध धुंध गोकुल सबकीनो हरिको आय उठायोजी ॥
लेकरि हरिको गयो अकासा धूरि धुंध ब्रज छायोजी ॥ १ ॥

दोहा–जहां तहां नर नारि सब, प्रलयकाल सम जान ॥
यशुमति दौरी अजिरमें, तहां न पायो कान्ह ॥

चौबोला–तहां न पायो कान्ह नंदको टेरत यशुमति माईजी ॥
तेरो सुत अंधबायु उडायो देखहु ब्रजमें जाईजी ॥
दौरी वेगि गुहार लगावो ब्रज जन्न लेहु बुलाईजी ॥
अति व्याकुल खोजत नंदरानी फिरत भवंन बिलखाइजी ॥१॥
तृणावर्तको यों हरि कीनो ग्रीव लिपट तरलाईजी ॥
काठिन शिलापर ताहि गिरायो ऊपर त्रिभुवन राईजी ॥
चूर चूर कर ताके गाँता दीने स्वर्ग पठाईजी ॥
धूरि धुंध सब तुरत विनाशा खोजत ब्रजजन आईजी ॥

१ ब्रह्मा। २ महतारी। ३ घर। ४ अँग।

दोहा–उपबनमें पाये हरी, ब्रज बनितन तहाँ आय ॥
लियो दौरि यशुमति महिर, अति हित कण्ठ लगाय ॥
चौबोला–अतिहितकंठलगायहरिहिआतुरयशुमतिपैआयेजी ॥
ह्वैगये ब्रजमें मंगलचारा घर घर आनँद बधायेजी ॥
लिये मात अति हित तब हरिको छातीसों लपटायेजी ॥
मनसी बहुतिक गाय नंद तब निरखि वदन सुख पायेजी ॥१॥
देहिं वसन भूषण मन माने अति हित नंदकी नारीजी ॥
नयो जन्म हरिको यह हैरी जहां तहां कहत विचारीजी ॥
डबरचो श्याम महिर बडभागी देखहु चोट न पारीजी ॥
रोग लेहुँ बलि जाउँ कन्हाई ब्रज जनके सुखकारीजी ॥ २ ॥
दोहा–भली प्रकृती यह नहीं, सुनो यशोमति माय ॥
इकलो हरिको छांडिकै, गृहके काज सिधाय ॥
चोबोला–गृहके काज सिधाय यशोमति काज इनहुँते प्यारोजी॥
बौरी अजहूं सुरति सँभारो उबरचो सुवन तुम्हारोजी ॥
भयो पुरबलो पुण्य सहाई यशुमति सोच विचारोजी ॥
अब मैं सीख तुम्हारी मानी तजहुँ न इक पलन्यारोजी ॥ १ ॥
मोहिं कहां हो यह सुख माई रंक परी निध पाईजी ॥
अब मैं अपनों लाल चितैहौं क्षण काहू न पत्याईजी ॥
कीनी विदा सकल सनमानी यहि विधि कहि समुझाईजी ॥
यशुमति हरिको गोद खिलावै देखि देखि हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कोमल श्यामल तन निरखि, बारबार पछि तात ॥
कैसे उबरचो आज हरि, तृणावर्त्तके घात ॥
चोबोला–तृणावर्त्तके घात भयो कोउ पूरब पुण्य सहाईजी ॥
कियो काज वह आय पूतना तृणावर्त्त कियो आईजी ॥
मात दुखित जिय जानि कृपाला भक्तनके सुखदाईजी ॥

बालचरित सुखदान करनलगे सुंदर कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
खेलत मात उछंग कन्हाई बालचरित सुखदाईजी ॥
जननी वेसर लटकत देखी चितवत इकटकलाईजी ॥
ताहि गहनको पाणि चलायो तब जननी उचियाईजी ॥
नहिं पहुँचे तब अति अकुलाये माता बलिबलिजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–निकट कियो जननी वदन, हँसिहुलसे किलकार ॥
जनु युग बिज्जूबीजकी, चमकपरी दृगझार ॥

चौबोला–चमकपरी दृगझार प्रमुदित निरखि यशोमतिमाईजी॥
प्रेम मगन तनकी सुधिभूली लीने नंद बुलाईजी ॥
परमानंद नन्द उठिधाये सफल किये दृगआईजी ॥
देखहु सुत मुखं दंतुलि आई लीने गोद कन्हाईजी ॥ १ ॥
निरखि तात मुख हरि हँसि दीने देखत नयन सिराईजी ॥
दूधदांतकी छवि अतिदेखी सुफल भई मनसाईजी ॥
कछु दिनघट षटमास भयेहरि सुन्दर श्यामकन्हाईजी ॥
अन्न परासन बूझहु शुभदिन बिहानाहिं विप्रबुलाईजी ॥ २ ॥

अथ अन्नप्रासन लीला।

दोहा–भये परासन योगहरि, सुनि पुलके नंदराय ॥
सोसुख कापै जातकहि, प्रेमरह्यो उरछाय ॥

चौबोला–प्रेम रह्यो उरछाय प्रातही लीने विप्र बुलाईजी ॥
राशि बूझि शुभ दिवस धरायो सो दिन आछो पाईजी ॥
सखिन बोलि शुभगान करायो गारिमहरिको गाईजी ॥
और महरको नाम सुनावै जो जाके मन आईजी ॥ १ ॥
मणि कंचनके थार मँगाये वासन. बहुविधि ल्याईजी ॥
नँद घरनी ब्रजवधू बुलाई जे सब जात सुहाईजी ॥

कोउ जिमनार कोऊ पकवाना खटरससोंज बनाईजी ॥
बहु प्रकारके व्यंजन ठाने स्वाद कहे नहिं जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—अति उज्वल व्यंजन अमित, कीने नाना भांति ॥
यशुमति नंदहि बोलि कहि, बोलहु अपनी जाति ॥
चौबोला—बोलहु अपनी जाति नंद तब अति आदरकर ल्यायेजी
आये सकल गोप अति हरषित बाहिर सब बैठायेजी ॥
भीतर गये आप नंदराई यशुमति कान्ह न्हवायेजी ॥
सुन्दर पट भूषण पहिराये मणिमयरतन जडायेजी ॥ १ ॥
तनु झंगुली शिर चौतनिसाजी करचूरा दोउ पाईजी ॥
बारबार मुख निरखि यशोमति हरिकोले तब लाईजी ॥
लै बैठे नंदराय गोद तब जानि शुभघरी आईजी ॥
लीने सदन बुलाय गोप सब आनँद उर न समाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आ बैठे सब गोपगण, अति हर्षित सुख पाय ॥
कनक थार भरि खीर धरि, मिश्री मधुर मिलाय ॥
चौबोला—मिश्री मधुर मिलाय नंद तब हरिके मुख जुठराईजी ॥
गोपबधू लागीं सब गावन आंगन बजत बधाईजी ॥
शंख निसान भेरि सहनाई और नगारन घाईजी ॥
खटरसके व्यंजन हैं जेते हरिके अधर छुवाईजी ॥ १ ॥
तनक अधर जलपोंछि छुवायो यशुमतिपै पहुँचायोजी ॥
हर्षवंत युवती सचुपायो लैलै गोद खिलायोजी ॥
विप्रन बोलि दक्षिणा दीनी जो जाके मन भायोजी ॥
गोपन संग महर नंदराई पनवारेपर आयोजी ॥ २ ॥
दोहा—अति रुचि सब भोजन कियो, दीने पान खवाय ॥
गोपवधू पहिराय सब, दीनी सुगंध सिंचाय ॥
चौबोला—दीनीसुगंधसिंचायइहिविधिसुखविलसतब्रज साराजी॥

१ घर। २ सुवर्ण।

निरखि श्याम मुख सुभग शरीरा आनँद रूप उदाराजी ॥
सुरसिहाय ललचाय मुनीजन कहि ब्रज भाग्य अपाराजी ॥
धन्य धन्य कहि सुमन झरी कारि प्रेम मगन मन भाराजी ॥१॥
नित नव हरिके मंगलचारा नित लीला छविछावैजी ॥
शेष न पावै पार हरीको कौन कवी सो गावैजी ॥
नेति नेति जिनको श्रुतिं गावै ब्रजजन गोद खिलावैजी ॥ २ ॥
जो सुख तीनलोकमें नाहीं सो यशुमति सुख पावैजी ॥

दोहा-नित्य नयो सुखलेत हैं, नये नये लाडनितोन ॥
नयन ओट नहिं करत हैं, जुगवत फणि मणि जोन ॥

चौबोला-जुगवतफाणिमणिजोनतनकमुखअधरअरुणताआईजी॥
तनक तनक कच घुंघरवारे कुटिल भ्रुकुटि छविछाईजी ॥
मसि व्यंदुका तापर राजै निरखत जन सुख पाईजी ॥
नयन नासिका भाल बिसाला कल बोलत सुखदाईजी ॥ १ ॥
अल्प दशन चिबुक दर ग्रीवा तन घनश्याम मुरारीजी ॥
मात निरखि नैनन सुख पावै प्रेम विवस अति भारीजी ॥
दीठ न लगे श्यामको मेरी यों मनमाहिं विचारीजी ॥
तब अचरातर लेत छिपाई राई नोन उतारीजी ॥ २ ॥

दोहा-कबहुँ झुलावत पालनें, कबहुँ खिलावत गोद ॥
कबहुँ सुलावत पलँगपर, यशुदा सहित विनोद ॥

चौबोला-यशुदासहितविनोदआवैनितसदनसकलब्रजवामाजी॥
लै लै गोद खिलावहिं हरिको मुदित निरखि घनश्यामाजी ॥
इह विधि विहरत बाल कन्हाई कछु दिनमें अभिरामाजी ॥
माखन मांगत कुँवर कन्हाई चलत घुटनि बलधामाजी ॥ १ ॥
खेलत मणिमय आंगनमाई देखत. निजपरछाईजी ॥
कबहुँकताको पकरन धावै जानू पाणि चलाईजी ॥

कबहूं किलक तातमुख पेखै हँसि जननी तन धाईजी ॥
कबहुँ बुलायलेत नँदरानी तब नँदके ढिग जाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कबहुँ किलक उठ धावहीं, गिरत परत छविछाय ॥
कबहुँ जात बलराम जह, गोपबाल समुदाय ॥
चौबोला-गोपबाल समुदाय तहां हरिजात सदनचल आवैजी ॥
माखन मांगत सैन चलावै कहन कछू नहिं पावैजी ॥
मात समुझि मथनी ते लेही माखन आनि खवावैजी ॥
खेलत खात कान्ह मणिआंगन घुटनन इत उत जावैजी ॥ १ ॥
करचूरा पग पैजनि बाजै पीत झंगुलि छविछाईजी ॥
उदर हरि नख कटिकिंकिणि सोहै मुख छबि बरनि न जाईजी॥
बजत पैंजनी शब्द सुनतही जनमनको सुखदाईजी ॥
हरिके बालचरित्र देखि सब सुर मुनि रहत लुभाईजी ॥ २ ॥
दोहा–खेलत आंगन बालहरि, तात मात सुखदाय ॥
चलत पाणि पदकी छवी, प्रतिबिंबन निज छाय ॥
चौबोला–प्रतिबिंबननिजछांयमनहुंछबि सुभगमहीतटपाईजी ॥
किधौं जान पदकोमलतासन कमलनि सेज बिछाईजी ॥
निरखि सुभग सोभा सुखदानी लिये हर्षि तब माईजी ॥
नील जलजतन सुंदर श्यामा अति छवि परम सुहाईजी ॥१॥
अरुण तरुन नख ज्योतिविराजै चरण कमल सुखदाईजी ॥
रुनक झुनक पद पैजनि बाजै सुनि सुर रहत लजाईजी ॥
कंटिकिंकिणी जटितरविकारी झंगुली पीत सुहाईजी ॥
कर कमलनि चूरा छविछाजै भुज बाजू छवि पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कठला हार जो अंगमें, बिच बिच पदिक पुवाय ॥
चारुचिबुक दुति अति बनी, गोलकपोलनि काय ॥
चौबोला–गोलकपोलनि काय अधरमधि दशनदुती प्रगटाईजी॥

मानहुं सुन्दरता सब विधिसों रूपरत्न छवि आईजी ॥
मधुर तोतरे बैन श्रवण सुनि सुर मुनि जन हरषाईजी ॥
सुनत होत चितचैन जननको समुझ परत कछुनाईजी ॥ १ ॥
नासा सुभग कमल दललोचन चंदन भाल लगायाजी ॥
भ्रुकुटी निकट मसिबिंदुछवी जनु अलिसावक सोइ आयाजी ॥
लालचोतनी शीश सुहावन नानामणिन जडायाजी ॥
बालदशाकेकच घुंघरारे निरखत जनमन भायाजी ॥ २ ॥

दोहा—मंजुल तारनकी चपल, बालदशा छविछाय ॥
चंद्रवदन मुखश्यामको, निरखि नंदसुखपाय ॥

चौवोला—निरखि नंदसुखपाय हरीको चूमि वदन उरलायोजी॥
सोसुखकापै जातं बतायो ब्रज युवतिन लखि पायोजी ॥
चित्र पूतरी सी रहिठाढी प्रेममगन सुख छायोजी ॥
गृहकारजकी सुरत बिसारी युवतिन हरि मन भायोजी ॥ १ ॥
विहारन प्रभु सबके सुखदानी प्रेमबिवस जनपावैजी ॥
बाल चरित लखिं सुर सनकादिक योगदशा बिसरावैजी ॥
परम पुनीत उदार हरीके बालचरित किमि गावैजी ॥
सुन्दरश्याम सुजान हरीसो संतनके मन भावैजी ॥ २ ॥

अथ नाम करण लीला ॥

दोहा—बालचरित नंदलालको, कापै वरण्यो जाय ॥
शेष कोटि शारद सहस, कल्पहिंसकाहिं न गाय ॥

चौवोला—कल्पहिंसकाहिं न गाय एकदिन मन वसुदेवके आईजी
पठये बोल गर्ग मुनि ज्ञानी करि पूजा बैठाईजी ॥
युग पद कमल शीश तवनायो सुनिये हो ऋषिराईजी ॥
तबते गोकुल नंद अबासा कंस भयो दुखदाईजी ॥ १ ॥

जाय रोहिणी कियो निवासा ताहि गर्भ श्रुत जायोजी ॥
कंस त्रासते प्रगट न कीनो नाम करण नहिं पायोजी ॥
भयो नहीं तुम विना गुसांई ताते तुमहिं बुलायोजी ॥
ताको नाम राखि तुम आवो सुनऋषि मन हरषायोजी ॥ २ ॥

दोहा—हरषि मुनी गोकुल गये, सुनि पायो नँदराय ॥
आज भाग्य हमरो बडो, धन्य ऋषी तुम आय ॥

चौबोला—धन्य ऋषी तुम आय नंद तब धोये पद हरषाईजी ॥
अरघासन अति हितकर दीनो कृपा करी ऋषिराईजी ॥
मोसम धन्य नहीं कोउ आजू व्यंजन विविध बनाईजी ॥
अति हितकर ऋषिराय जिमाये दीने पान खवाईजी ॥ १ ॥
बहुरि महर नंदराय ऋषी सों कह्यो जोरकर दोईजी ॥
केहि कारज प्रभु आगम कीनो कहो कृपा करि सोईजी ॥
तब बोले ऋषिराय नंद सों पठयो वसुदेव मोईजी ॥
नामकरणके काज रोहिणी सुवन जन्म लियो जोईजी ॥ २ ॥

दोहा—लेआये बालक उभय, सुनत नंद हरषाय ॥
मुनि चरणन राखे दोऊ, दै अशीश ऋषिराय ॥

चौबोला—दै अशीश ऋषिराय प्रथम नंद बालिकोहाथ दिखायोजी
जन्म दिवस मुनि पास सुनायो देखि ऋषी चित लायोजी ॥
है यह शिशु सब जगत अधारा अति शुभ लक्षण जायोजी ॥
धरचो नाम तिनको बलरामा बहुरि नंद शिर नायोजी ॥ १ ॥
कहचो कि ऋषि मम भाग्यन आये तुम सर्वज्ञ सुहायेजी ॥
देखिये या बालकको हाथा मुनिवर देखि लुभायेजी ॥
प्रेममगन रुवतन पुलकाने पुनि हरि बदन लखायेजी ॥
बोले मुनिवर सुरति संभारी धनि धनि दरशन पायेजी ॥ २ ॥

दोहा—धन्य धन्य नँद पुण्य तुम, धनि यह महरि यशोद ॥
धनि धनि यह सुकृत फल्यो, धन्य खिलावत गोद ॥

चौबोला—धन्य खिलावतगोद सुनहु नंद कहूं मैं सत्य बखानीजी॥
इनको तुम सुत करि मति मानो लीज्यो निश्चय जानीजी ॥
रूप रेख जाने नहिं कोई अज अनादि सुखदानीजी ॥
सो भक्तन हित अवतरे आई निज इच्छा अनुमानीजी ॥ १ ॥
इनते बड़ो न कोय जगतमें जग करता अभिरामाजी ॥
इनके नाम अमित जगमाहीं कहूं कछू यकनामाजी ॥
इन कबहुँक वसुदेवके धामा लियो जन्म सुख श्यामाजी ॥
ताते बासुदेव इकनामा सुमिरत पावै कामाजी ॥ २ ॥

दोहा—कहिहैं इनको कृष्ण सब, सुमिरत पाप नशाय ॥
अरु ये जैसे कर्मकरि, तैसे नाम उपाय ॥

चौबोला—तैसेइ नाम उपाय दुष्टदल संतनके सुखदाईजी ॥
भूमीभार उतारन कारन प्रगट भये दोउ भाईजी ॥
तुम कबहूँ तपकर यह मांगा तुमको गोद खिलाईजी ॥
ताते सुतकरि तुम यह पायो निज जायो यह नाईजी ॥ १ ॥
करिहैं ये आनंद घनेरे हरि सबके सुखदानीजी ॥
आनंदे सब ब्रजके बासी सुनी ऋषी मुख बानीजी ॥
सुनत नंद यशुमति सुख पायो परे चरण ऋषि आनीजी ॥
बहुत भेटले आगे राखी स्तुति बहुविधि ठानीजी ॥ २ ॥

दोहा—विदाभये ऋषिराय तब, नंदभाग्य बड़ भाखि ॥
चले मधुपुरीको हरषि, हरि मूरति उर राखि ॥

चौबोला—हरि मूरति उर राखि गये वसुदेवहि जाय सुनाईजी ॥
सुनत बहुत सुख पाय ऋषीको दीनी अमित बिदाईजी ॥

यशुमति सुनत गर्गकी वानी अपनो भाग्य सिराईजी ॥
हरिको लै उरसों लपटायो अति आनन्द मनमाईजी ॥ १ ॥
रोहिणि और यशोदा निरखत श्याम राम मुखमोदाजी ॥
खंकि खंकि हरि बैठत गोदा भावत बाल विनोदाजी ॥
पुनि पुनि तुतरे बोल बुलावै लीने हित करि गोदाजी ॥
कबहुंक गावत करतारी दै सिखवत चलन यशोदाजी ॥ २ ॥

दोहा—तनक तनक भुज टेक करि, ठाढो होन सिखाय ॥
लरखरातलखि मन सुखी, पुनि पदद्वैक चलाय ॥

चौबोला-पुनि पदद्वैक चलाय मनाहिं मन यों विधनाहिं मनाईजी॥
कबधौं अपने पायन धावै यशुमति यह मन चाईजी ॥
कबहुंक छोर देत अँगनैया खेलत हैं दोउ भाईजी ॥
जिमि बछराके पाछे गैया सँगडोलत दोउ माईजी ॥ १ ॥
धौरी धूरि धूसरतवन बाल विभूषण अंगाजी ॥
अंजन रंजित दृग चपलाई निरखत लजत अनंगाजी ॥
माणि मय आंगन नंदके डोलत जिमि रवि शशि दोऊ संगाजी ॥
दहन दनुज कुल बन अनल हरि यदुकुल आनँद रंगाजी ॥२ ॥

दोहा—कबहुँक ठाढ़े होत हैं, गहि मैयाके अंग ॥
कबहुँक हुलसित चलत हैं, रामकृष्ण दोउ संग ॥

चौबोला—राम कृष्ण दोउ संग झँगुलिया चित्रविचित्र सुहावैजी॥
दमाकि उठत द्वैललितदतुलिया मासि बिंदुकमन भावैजी ॥
गाहिमणि खंभडगत 'डय डोलैः वचन तो तरे आवैजी ॥
मथत जहां दधि नंदकि रानी गहि मथनी हरषावैजी ॥ १ ॥
मात तनक दधिदेत खवाई लेतप्रीत मुखनावैजी ॥
क्षिर समुद्र जासु रजधानी तनकदही रुचिआवैजी ॥
तनकसों वदन तनक सी दतियां तनक अधरछबि छावैजी ॥

तनक हँसन मन हरत अमोलन तनक कपोल सुहावैजी ॥ २॥

अथ बरसगांठ लीला।

दोहा–तनकहि माखन तनककर, तनकअँगुरियनखाय ॥
तनक तनक भुज चरण शुभ, तनक स्वरूप बनाय॥
चौबोला–तनक स्वरूप बनाय विलोकत सकलभवनकोआपैजी
तरहि सिंधु संसार तनकजो करे नामको जापैजी ॥
तनकहि नामलियेते जाको तनक रहत नहिंपापैजी ॥
तनक कृपाजापर हरिकरहीं मिटत सकल भवतापैजी ॥ १ ॥
वरषगांठ लालनकी आई द्वैषटमांस कन्हाईजी ॥
फूली फिरत यशोमाति माई लीनी बधू बुलाईजी ॥
प्रमुदित मंगलगान करायो आंगनबजीवधाईजी ॥
मंदिरसकलसुगंध सिचायो मोतिन चौक पुराईजी ॥
दोहा–नंदमहर फूलेफिरत, लीने गोप बुलाय ॥
द्वारनिबंदनवारबाँधि, ध्वजपताकफहराय ॥
चौबोला–ध्वजपताकफहराय पान फल फूलडार मँगवाईजी ॥
हरद दूब दधि अक्षतमाला लीनेसकल धराईजी ॥
मंगल द्रव्य सकल मँगवायो मेवा अमित मिठाईजी ॥
यशुमति कान्हाहिं उबटन्हवायो पट भूषण पहराईजी ॥ १ ॥
कठला कंठ बघनखा नीको केसर तिलक लगावैजी ॥
लटकत ललित ललाट लटूरी छवि बरनी नहिं जावैजी ॥
नयन आंजि कीनो मसि बिंदा भ्रुकुटी निकट सुहावैजी ॥
करि शृंगार मुख चूम श्यामको यशुमाति मन हरषावैजी ॥२॥
दोहा–नंद बोलि यशुमति कह्यो, लिये गोद सुखकंद ॥
लग्न घरी आवत चली, बोलहु भूसुर वृन्द ॥

चौबोला–बोलहु भूसुर वृंद काहिको अब तुम गहर लगाईजी ॥
विप्र वेगि काहे न बुलावत लग्न घरी टरि जाईजी ॥
नंद क्षिप्रवर विप्र बुलाये चरण धोय बैठाईजी ॥
लै उछंग लालन नंदराई बैठे चौकी आईजी ॥ १ ॥
वेद मंत्र विधि सहित पढावैं बरष गांठि जुरवावैजी ॥
मंगल तिलक लालके लावे ब्रजनारी सब आवैजी ॥
हरि दरशन प्यासी मृगनैनी गोकुल मंगल गावैजी ॥
तिलक सबहि मोहन के लावै निरखि श्याम सुख पावैजी ॥२॥

दोहा–विप्रनदै बहुदक्षिणा, बांटि मिठाई पान ॥
बारबारनेगीनको, दे धन मणि मन मान ॥

चौबोला–दे धन मणि मन मान तबै सारी पंच रंग मंगाईजी ॥
हरषित माहिर बधू पहिराई दै अशीश सुख पाईजी ॥
लेति यशोमति भरि भरि गोदा गोकुल होत बधाईजी ॥
सदा श्याम जनके रखवारे विहरन बलि बलि जाईजी ॥ १ ॥
धन्य धन्य यशोमति धन्य नंद तुम बाल विनोद सुहावैजी ॥
धन्य सुमन जिन जननके हैं जिन यह रस मन भावैजी ॥
धनि धनि ब्रजकी बालकही सुर सुमनन झरी लगावैजी ॥
धन्य धन्य नँदलाल दैत्यदलन सज्जन सुखद उपावैजी ॥ २ ॥

दोहा–लखि यशुमति सुख पात अति, चलत कान्ह द्वै पांय॥
करत हुती अभिलाष सोइ, देखति नैन निकाय ॥

चौबोला–देखति नैन निकाय बजत पदनूपुरअतिछविछाईजी ॥
डगमगात डोलत हरि डोलैं सोछवि परम सुहाईजी ॥
बैठजात पुनि उठत तुरतही देहरि लौं चले आईजी ॥
धाम अवधि राखत अटकाई देहरि नांघि न जाईजी ॥ १ ॥
कीनी तीन पेड जिन वसुधा यशुदा देहरि नँघावैजी ॥

पकरि पाणि क्रम क्रम उतरावै लखि सुर विस्मय आवैजी ॥
कोटि ब्रह्मांडरचै पल माईं पलमें ताहि मिटावैजी ॥
ताहि खिलावति यशुमत ग्वारी नाना लाड़ लडावैजी ॥ २ ॥
दोहा–कबहुँक दे करतारि अरु, मधुर मधुर सुर गाय ॥
देखि श्याम जननी तनाहिं, गावत तारि बजाय ॥
चौपाई–गावततारि बजाय चरणनूपुर कटिकिंकिणि खासाजी॥
लखि छवि मन अभिलाषन पुरवत रहत मनहिंमें आसाजी ॥
सोभित कंठला कंठ हरीके उर हरि नख छविरासाजी ॥
मनहुँश्याम घनमाहिं कियो है नभ शशि बिमल प्रकाशाजी॥१॥
नचहु लेहु नवनीत लालसद कहि जननी बलि जाईजी ॥
त्रिभुवन पति नवनीत हेत तब धरतरुनकछुनपाईजी ॥
बोलनि लगे श्याम कलबानी कछुक तोतरी आईजी ॥
नंदहितात यशोदा मैया बलदाऊते भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–माखन रोटी मातसों, उठि मांगत दोउ भ्रात ॥
अचरा गहे न मानहीं, अति ठुनकत दोउ भ्रात ॥
चौबोला-अतिठुनकतदोउभ्रातसुनतिमुख मधुरवचनसुखदाईजी
ताते जननी गहर लगावत सुनि २ मनसुख पाईजी ॥
जननी मध्य सन्मुख संकर्षण पाछे श्याम कन्हाईजी ॥
मनहुँ सरस्वती संग युगपक्षी हंस मोर छवि छाईजी ॥ १ ॥
कवरी गही श्याम खिजताई मुक्तमाल बलभाईजी ॥
कीनो जननी सों झगरो मनु दुहुँ निज निज भखपाईजी ॥
यशुमति मुदित कर्मकी मोटी देखि नंद हरषाईजी ॥
यहै बात मोहन तेरी खोटी चोटी पकरत आईजी ॥ २ ॥

अथ ब्राह्मण लीला ॥

दोहा–जो चाहौ सो लेहु तुम, कहति यशोमति माय ॥

करहु कलेऊलालदोऊ, जननी बलि बलि जाय ॥
चौबोला-जननी बलि बलि जाय कलेऊ दियो मात हरषाईजी॥
खात खवावत बालनके संग हरि त्रिभुवन के राईजी ॥
जिहिं ध्यावत योगी सनकादिक करि आनन्द मनमाईजी ॥
कौतुकनिधि जगदीश हरीसो संतनके सुखदाईजी ॥ १ ॥
चलत लाल पैंजनिके चावन हर्षित लखिनिजपाईजी ॥
विविध ग्वाल बालन संग लीने डगमग डोलत जाईजी ॥
कबहुँकदौरि द्वार लौं जावै पुनि भाजत घरमाईजी ॥
ब्राह्मण एक नंदवके आयो हरिजन बैस बुढाईजी ॥ २ ॥
दोहा-गोपनको सो पूज्य है, पुत्र जन्म सुनि आय ॥
लखि यशुमति आनन्द भई, आदर कर बैठाय ॥
चौबोला-आदरकर बैठाय धोयपद लियो जलशीश चढाईजी॥
पाक करनको भवन लिपायो जल भाजन मँगवाईजी ॥
भोजन लेहु बनाय वीनती करी यशोमति माईजी ॥
धेनु दुहाय दूध लै आई पांडे क्षीर बनाईजी ॥ १ ॥
घृतमिष्टान्न क्षीर मिश्रित कर हरिहित थार सजायोजी ॥
वेदमंत्र पाढिकै हरि ध्यायो विधिवत भोग लगायोजी ॥
नैन मूंदिकै ध्यान लगायो दौरिश्याम तहां आयोजी ॥
नैन उघार विप्र जो देख्यो श्यामहिं जोवत पायोजी ॥
दोहा--अहो यशोदा आपने, सुत कृत देखो आय ॥
सिद्ध पाक सब आयके, डारचो कान्ह जुँठाय ॥
चौबोला-डाऱ्योकान्ह झुँठाय जोरकर कह्यो सुनो द्विजराईजी॥
बहुरो लीजै पाकवनाई कहति यशोमतिमाईजी ॥
बहुरि दूध मिष्टान्न मँगायो पांडे क्षीर बनाईजी ॥
जबहीं ध्यानधऱ्यो मनलाई लागे खान कन्हाईजी ॥ १ ॥

ऐसे विप्रनजेवनपावै हरिताको छूआवैजी ॥
तब यशुमति हरि पै रिसहाई तू कत विप्रखिजावैजी ॥
मैं इच्छाकर विप्रजिमाऊं जब वह पाक बनावैजी ॥
वह अपने ठाकुरहिजिमावै तू काहे जा खावैजी ॥ २ ॥

दोहा–मैयामोहिजिन दोषदे, वह मोहिंलेतबुलाय ॥
नैनमूंद कर जोरिकै, बहुबिधिविनय सुनाय ॥

चौबोला–बहु विधि बिनय सुनाय नामलैलै कहिमोहिं बुलावैजी
खीर खाँड यह भोग लगावो वेदमंत्रपढिध्यावैजी ॥
तब मैं रहिनसकों उठधाऊं वह करि प्रीति जिमावैजी ॥
प्रेमसहित जब मोहिं बुलावै तब नरहत बनिआवैजी ॥ १ ॥
सुनत गूढ मृदु हरिके बैना गयोभर्म सुधि आईजी ॥
खुलिगये विप्र हृदयके नैना प्रेमरह्यो उरछाईजी ॥
धनि धनि गोकुल धन्य नंद यह धन्य यशोदा माईजी ॥
धनि ब्रजवासी धन्य ब्रज जहां प्रगटे त्रिभुवन राईजी ॥ २ ॥

दोहा-प्रगट भयो मम सुकृत फल, सफल जन्म प्रभु आज॥
दियो दरशमोहिं कृपा करि, दीनबंधु ब्रजराज ॥

चौबोला–दीनबंधु ब्रजराज कहत द्विज नंदके आंगन माईजी ॥
लोटत बारहि बार कहत मुख धनि त्रिभुवनके राईजी ॥
मैं अपराध कियो विन जाने पहिचाने प्रभु नाईजी ॥
यहै नाथ तुम्हरी बड़ियाई जनकी करत सहाईजी ॥ १ ॥
जे जे शरण तुम्हारी आये ते सब मुक्ति पठायेजी ॥
पतित उधारन नाम तुम्हारो अघ जारन हरि आयेजी ॥
देह धरत गो द्विज हितकारन धनि मोहिं दरश दिखायेजी ॥
हितकी चितकी जाननहारे सब जनके मन भायेजी ॥ २ ॥

दोहा–शरण शरण प्रभु शरण कहि, दियो दरश सुखकंद ॥
हँसत श्याम जननी निकट, प्रेम मगन आनंद ॥
चौबोला–प्रेम मगन आनंद जानि जन करी कृपा हितकारीजी॥
प्रेम भक्ति हरिताको दीनी दियो अभय पद भारीजी ॥
पुनि पुनि मन हरषाय कहत द्विज जै जै श्याम मुरारीजी ॥
विदा भयो घरको द्विजईशा पुलकित अंग अपारीजी ॥ १ ॥
देखि चरित चकृत भइ यशुदा परी विप्रके पाईजी ॥
दिये रत्नमन मान दक्षिणा चले हरषि द्विजराईजी ॥
यशुमति हरिके लाड़ लड़ावै लीने गोदउठाईजी ॥
आनंदनिधि सुख सदन भयोहै चितै वदन बलिजाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सोभा मेरे लालपै, पटतरको कोआन ॥
मेरे जीवन लाड़ले, विहँसि कियो पय पान ॥
चौबोला–विहँसिकियोपयपानअजिरठाढ़ीयशुमतिसुखपावैजी॥
गोदी लिये श्याम सुखदानी आनँद उर न समावैजी ॥
उदय भयो शशि शरद सुहावन शशिको मात दिखावैजी ॥
देखहु श्याम चंद्र यह आवत दृगकी ताप नशावैजी ॥ १ ॥
चितै रहे हरि इकटक लाई करते निकट बुलाईजी ॥
मैया यह मीठो कै खारो देखत मोहिं सुहाईजी ॥
देहि मँगाय निकट यह लेहों भूख लगी मैं खाईजी ॥
देहि वेगि मैं बहुत भुखानो मांगतही विरुझाईजी ॥ २ ॥
दोहा–क्यों मैं चंद्र दिखाइयो, यशुमति मन पछिताय ॥
रोवत हरि मानत नहीं, कैसे लेहुँ मनाय ॥
चौबोला–कैसे लेहुँ मनाय विविध भाँतिन हरिको समुझावैजी ॥
आन बतावै आन दिखावै नाना विधि फुसलावैजी ॥
कौनी विधि समुझाऊँ श्यामहि शशि किम करमें आवैजी ॥

भूल दिखायो चंद्र आज मैं यशुमाति मन पछितावैजी ॥ १ ॥
अनहोनी नाहिं होय तात तुम चंद्र खान कहो सोईजी ॥
चंद्र खिलौना सकल जगतको याहि खात नाहिं कोईजी ॥
यहै देत नित माखन मोको क्षण क्षण देत सो तोईजी ॥
जो तुम श्याम चंद्रको खैहो वहुरि न माखन होईजी ॥

दोहा--देखत रहिये चंद्रको, हठना करो गुपाल ॥
मधु मेवा पकवान यह, सो तुम खावो लाल ॥

चौबोला--सोतुम खावो लाल पांलागौंरिसही रिस तन छीजैजी ॥
हठ जिन करो लाल बलिजाऊँ जो चाहे सो लीजैजी ॥
खसि २ परत कान्ह कनियांते दे शशि देर न कीजैजी ॥
यशुमाति कहत सनाहिं मन माई चंद्र कहांसे दीजैजी ॥ १ ॥
तब यशुमाति इक जल पुट लीन्हों ऊँचो लियो उठाईजी ॥
आहु चंद्र तोहिं लाल बुलावै ऐसे कहि बहलाईजी ॥
हाथ लियो तोहि खेलत रहि है भूपर रखि है नाईजी ॥
तब जलपुट धरणीपर राख्यो लेहु चंद्र मैं लाईजी ॥ २ ॥

दोहा--लेहु लाल यह चंद्र मैं, लीनो निकट बुलाय ॥
रोवै इतनेके लिये, तेरी श्याम बलाय ॥

चौबोला--तेरी श्याम बलाय याहि तुम देखहु लाल मुरारीजी ॥
जाकारण सुन्दर घनश्यामा कीन्हों हठ तुम भारीजी ॥
देखि श्याम मुसकाय दोउकर डारत बारहिबारीजी ॥
आवत कछू हाथमें नाहीं जल तन रहे निहारीजी ॥ १ ॥
तब जलपुटके नीचे देख्यो तहँ कछु नाहिं लखाईजी ॥
देखतहँसीं सकल ब्रजनारी लखि जननी मुसकाईजी ॥
तबहिं श्याम कछु हँसि मुसक्याने वहुरि तुरत विरुझाईजी ॥
ल्योंगोरी माँ चन्दा ल्योंगो बाहिर करके माईजी ॥ २ ॥

दोहा–मेरे कर आवत नहीं, कलबलात जल माहि ॥
बाहर काढि निकारिके, कहां सो देहि बताहि ॥
चौबोला-कहां सो देहि बताहि कह्यो यशुदा तुम सुनो कन्हाईजी।
तुम मुख लखि सकुचत है चंदा तुम तिहिं पकरन धाईजी ॥
ताते शशि भजि गयो पताला अब तुमते डर पाईजी ॥
कहत अहो हरि शरण तुम्हारी सोये हरि विरुझाईजी ॥ १ ॥
लै पौढाये सेज श्यामको हित करि यशुमति माईजी ॥
अति विरुझाने आज हरी यह कहि कहिके पछिताईजी ॥
मधुरे सुर गावत कछु यशुदा करसों ठोक सुवाईजी ॥
चटपटाय हरि चौक परे तब उठ बैठे अतुराईजी ॥ २ ॥

अथ पुरातन कथा लीला ॥

वार्ता–यशोदा जीने अपने लाला सों कहोकि तुम पौढौ मैं एक सुन्दर कहानी कहूंगी तब श्रीकृष्ण सोये अरु हुंकारी देने लगे यशोदाजी कहने लगी ॥

दोहा–नगर एक रमणीकहै, नाम अवध त्यहि जान ॥
बडे बडे मंदिर महल, सुन्दर सुखद सुहान ॥
चौबोला–सुन्दर सुखद सुहान बहुत गली पुरके माहिं सुहानीजी
विविध भांतिके अगम अटारी रहत सुगंधि सिचानीजी ॥
भांति भांति बहु हाट बजारू अति सुन्दर मन मानीजी ॥
तहां नृपति दशरथ रजधानी तीन नारि पटरानीजी ॥ १ ॥
कौशल्या कैकयी सुमित्रा तिन जाये सुत चारीजी ॥
राम लषण भरत रिपुहंता बल गुण रूप अपारीजी ॥
तिनमें राम एकव्रतधारी हैं जनके हितकारीजी ॥
विश्वामित्र एक ऋषिराई दनुज सतावै भारीजी ॥ २ ॥

दोहा–तिन नृप सों द्वैसुत लिये, अपनी रक्षा लाय॥
राम लषण ऋषि ले गये, दनुजहते तिन जाय॥
चौबोला–दनुजहते तिन जाय ऋषीने दैविद्या सुख पायेजी॥
तहां जनक इक भूप स्वयंबर धनुषयज्ञ ठहरायेजी॥
कन्या तासु अनूप जुरे तहां भूपति अमित सुहायेजी॥
ऋषि ले गये कुँवर तहां दोऊ जनकराय मन भायेजी॥ १॥
धनुष तोरि भूपन मुख मारे कन्या राम बिवाईजी॥
चारहु कुँवर व्याह तहां आये बाजी अवध बधाईजी॥
रामहिंदेन लगे नृप राजू सब अभिषेक सजाईजी॥
तहि समय कैकयी रानी चेरी मति बौराईजी॥
दोहा–वचन मांगि नृप सों लियो, दीने बनहिं पठाय॥
राम वचन पितुके सुने, नारि सहित बन जाय॥
चौबोला–नारिसहितबनजायचलतसँगलक्ष्मणभ्राता आयोजी॥
उनके जात पिता तनु त्याज्यो भरत दरश मन लायोजी॥
चित्रकूट गये भरत मिलन तब दैपद अवध पठायोजी॥
युवती हेत कपट मृगकारन बनहिं राम उठ धायोजी॥ १॥
रावण हरण कियो तब नारी सुनतहि नींद बिसारीजी॥
चौंकिकह्यो लक्ष्मण धनु देहू देखि रही महतारीजी॥
जननी मन संदेह भयो है चौंकत किम बनवारीजी॥
कहूंदीठ खेलत लागीधौं सुपने डरयो मुरारीजी॥ २॥
दोहा–बहुविधिदेव मनायपढि,मंत्रन दोषनिवारि॥
पीवत पानी वारि पुनि, राई नोन उतारि॥
चौबोला–राईनोन उतारि कहतिहारि करीचन्द हितआरीजी॥
झिझकि उठ्यो है धौं ताहीते रह्यो सुरत उरधारीजी॥
कहि नहिं सकत वेदहू महिमा बड़भागिन नँदनारीजी॥

बिसरावति त्रयतापदुःख सब हरिको वदन निहारीजी ॥ १ ॥
प्रात नंद उठि हारि पै आये छबि देखन अतुरायेजी ॥
निशिके द्वंदनैन अनि आरत हरुवै पट उघरायेजी ॥
स्वच्छसेजते बदन प्रकाश्यो नैननद्वंद मिटायेजी ॥
धाये ब्रजजन चतुर चकोरा रहेएक टकलायेजी ॥ २ ॥

अथ कर्ण छेदनलीला।

दोहा–फूली यशुमति मन अति, कहति उठहु गोपाल ॥
जो भावै सोलेहु तुम, माखनरोटी लाल ॥
चौबोला–माखनरोटी लाल तुरत मेवा मधु मिश्री आनीजी ॥
कछु खवाय जननी तब हरिको धोयो मुखलै पानीजी ॥
देखि बदन छबि महर नंदसों कहाति यशोमतिरानीजी ॥
कनछेदन अब हरिको कीजै कुंडल छबि मनजानीजी ॥ १॥
बोलविप्र शुभदिवस गिनायो जाति कुटुम बुलवायोजी ॥
कुल व्यवहार कियो सब साजा बाजो विविध बजायोजी ॥
बजी बधाई बहु विधि आंगन नारिन मंगलगायोजी ॥
सुर हरषित बरषित अति हित करि फूलन गोकुल छायोजी॥२॥
दोहा–करि मुंडन तब श्यामको, श्रवण वेद विधिलाय ॥
धरी सुपारी पानपर, गुड़ भेली मँगवाय ॥
चौबोला–गुड़भेलीमँगवायहँसतमनशिव विधिसुर समुदाईजी ॥
अतिही कोमल श्रवणन बेधन मात न सकत लखाईजी ॥
भरि सींक रोचन देत श्रवणन निकट करि चतुराईजी ॥
द्वेदुर मँगाये कनकके काहि छेदहु आतुर आईजी ॥ १ ॥
देखत रोवत जननीलीने हँसती गोपकुमारीजी ॥
हँसत नंद सब युवती गावें लिये सदन महतारीजी ॥
कहति सुर बनिता परस्पर धनि धनि ब्रजकी ग्वारीजी ॥

नहीं इनकी किंकरी सम हम सकल सुर नारीजी ॥ २ ॥

दोहा-करति निछावर ब्रजबधू, धन मणि भूषण चीर ॥
सकल अशीशत नंदसुत, जहँ तहँ याचक भीर ॥

चौबोला-जहँ तहँ याचकभीरनंदसबब्रजबनितन पहिरावैजी ॥
आनँद उर न समाय उमँगि जनु बारि चहूंदिश जावैजी ॥
मंगल मूरति हरिसुत जाके नित नव मंगल भावैजी ॥
सोई सुख उपजात हरी जिहिं मात पिता सुख पावैजी॥ १॥
जाको भेद वेद नहिं पावै सो हरि कान छिदावैजी ॥
निज भक्तन हित नर तनु धारी बालचरित उपजावैजी ॥
नंद भवन भूषण मन भावै हरि अपने रंग गावैजी ॥
तनक तनक चरणन सों नाचे रीझ विविध सुख पावैजी ॥२॥

दोहा-मंदमंद नूपुर छवि, बाजत परम सुहाय ॥
कबहुँक भुजा उठायके, गायन लेत बुलाय ॥

चौबोला-गायन लेत बुलाय कबहुँ हरि लै माखन मुखखाईजी॥
कबहुँ खंब प्रतिबिंब खवावैं सो छवि बरणि न जाईजी ॥
तासों कहत लेत क्यों नाईं डार देत महिमाईजी ॥
उर आनंद करति अति भारी देखति यशुमति माईजी ॥१॥
हरषित जननी मुख चुंमनकर लीने गोद उठाईजी ॥
परमानंद मगन महतारी सो सुख कहत न आईजी ॥
कौतुकनिधि भगवान करत यह चरित सकल सुखदाईजी ॥
सुन्दरश्याम सुजान हरीपर विहारन बलि बलि जाईजी ॥२॥

अथ माटीखान लीला ॥

दोहा-खेलत हैं हरि द्वारपर, संग गोपके बाल ॥
अति बालक भोरे सकल, प्रीति करत नँदलाल ॥

चौबोला-प्रीति करत नंदलाल एक सम सकलबैस अतिबारीजी
करत बाललीला सुखदाई देत परस्पर गारीजी ॥
गावत हँसत देत किलकारी देखि सुखी महतारीजी ॥
निरखि रूप सब ब्रज जन मोहे कोटिं काम बलिहारीजी ॥ १॥
तन पुलकित अति गदगद बानी निरखि महरि मन माईजी ॥
तबहिं श्याम घनमाटी खाई मात सांटि लै धाईजी ॥
उगलहुबेगि बदनते माटी नाहिं तो सांटि लगाईजी ॥
पकरी भुजा श्यामकी जाई मानत नाहिं कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा-झुठवत हौ नितग्वाल सब, अब कहा कहिये बात ॥
तब मोहन लँगराइ करि, मैं माटी नँहि खात ॥

चौबोला-मैं माटी नहिं खात झूंठही मोको लोग लगाईजी॥
कहा कहत मैया तू मोसों मैं माटी नँहि खाईजी ॥
झूठ कहत तोसों सब आई माटि न मोहिं सुहाईजी ॥
नहिं मानत जो मात देखि तोहि दिखराऊं मुँहुँ बाईजी ॥१॥
नयन मूंदि माता ढिग ठाढे दीनो मुखहि उघारीजी ॥
तनकी सुरतिरही नहिं तनको देखि चरित नँदनारीजी ॥
त्रिभुवन सब सुखमें दरशायो नभ शशि रवि तिहिं ठारीजी ॥
सागर सरिता गिरि चतुरानन सुर सुरेश त्रिपुरारीजी ॥

दोहा-सकल लोक यम काल सब, महि मंडल अगजाल ॥
देखि चरित यशुमति रही, डारि सांटि तिहिकाल ॥

चौबोला-डारिसांटितिहिंकालमूंद मुख दीने नयन उघारीजी॥
मैया मैं माटी नहिं खाई ऐसे कहत मुरारीजी ॥
यशुदा चरित भई कहि नँद सों प्रभुके चरित अपारीजी ॥
हरिकी कथा नजात बखानी माटी मिस सुखकारीजी ॥ १ ॥
स्वर्ग पाताल धरणि बन बागा तीन लोक दिखराईजी ॥

सुर नर असुर विपुल खग नाना अपर सृष्टिता माईजी ॥
देख्यो सकल वदनके माहीं मोको परत लखाईजी ॥
जो कछु कही गर्ग ऋषिवाणी सो सांची है आईजी ॥ २ ॥

दोहा–नंद कहत सुन बावरी, हरि अतिकोमलगात ॥
लै सांटी धावत वृथा, पुनिपाछे पछितात ॥

चौबोला–पुनिपाछे पछितातको जानें अचरज तेरी बाताजी ॥
रामश्याम खेलत हँसत यह कुशलरहो दोउभ्राताजी ॥
मैं तेरी बलिजात कन्हाई कहति श्याम सों माताजी ॥
मैं अजान रिस बीचनजानी वृथा क्रोधकरि ताताजी ॥ १ ॥
जरहुहाथ जिन सांटि उठाई बहुरि आंख दिखराईजी ॥
मधु मेवा पकवान छांडिकै तुम माटी किमखाईजी ॥
कहति नंदसों यशुदारानी दुहो लालकी गाईजी ॥
कजरीको पयपियो गुपाला जिमि चोटी बढिजाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सब लरकन में श्री अधिक,वेग बैस बलआय ॥
मात वचन सुनिकैं हरषि,ज्यों त्यों करि पयप्याय ॥

चौबोला-ज्योंत्योंकरि पयप्याय खिनकपीवै खिन इतउतधाईजी॥
देखि देखि मुख हँसत यशोदा मनमनहरषबढाईजी ॥
मैयाकब बाढेगी चोटी अबलों बढि नाहिं पाईजी ॥
तूजो कहत ही बलिलों है है गुहत गोडलौं जाईजी ॥ १ ॥
केतीबेर भई पयपीवत चोटी बाढत नाईजी ॥
कहि कहि झूठी बात नितहिनित दूधपियावत माईजी ॥
सुनि सुनि भोरी बात श्यामकी यशुमति मन सुख पाईजी ॥
सुन्दर श्याम सुजान हरी पर विहारन बलि बलि जाईजी ॥२॥

अथ शालिग्राम लीला ॥

दोहा–भोर महर यमुना गये, दरशन करि सुखपाय ॥

करि स्नान तब नंदजी, पूजा हित जलल्याय ॥
चौबोला–पूजाहित जलल्याय धोयपद गये मंदिर नंदराईजी ॥
करी दंडवत अतिहि प्रेम सों मन मन प्रीति बढाईजी ॥
स्थललीप पात्र सब धोये पूजा सोंज सजाईजी ॥
कुँवर कान्ह खेलतते आये देखि रहे चितलाईजी ॥ १ ॥
बिधिवत देव न्हवाय नंद तब चंदन पुहुप चढायेजी ॥
भूषण बसन अलंकृत कीन्हे धूपदीप करि ध्यायेजी ॥
पट अंतर दे भोग लगायो चरणन शीश नवायेजी ॥
तबहीं श्याम बिहँसि उठ बोले जो तुम भोग लगायेजी ॥
दोहा–जो तुम भोग लगाइयो, सो तो देव न खाय ॥
सुनत बचन हरि बदन तन, चितै रहे नँदराय ॥
चौबोला–चितै रहे नँदराय कहत नंद योंनहिं कहिये बाताजी॥
देवनको कर जोर मनावो कुशल रहैं जिहिं गाताजी ॥
हँसतश्याम सुखदाइ हरीको नंद स्वरूप न पाताजी ॥
रह्यो तिनहिं सुतमान्य हरी सो अखिल भवनके दाताजी ॥१॥
देखत जननि तहां दुर ठाढ़ी प्रेम मगनमन माईजी ॥
बैठे नंद समाधि चढाई लीला रची कन्हाईजी ॥
शालिग्राम मेल मुख लीन्हों बैठे मौन लगाईजी ॥
ध्यान विसर्ज्जन करि नंद देख्यो आगे ठाकुर नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–नंदराय खोजत चकित, इष्ट देव नाहिं पाय ॥
किन धौं लियो चुरायकै, अति अचरज रह्यो आय ॥
चौबोला-अति अचरज रह्यो आय बिहँसित जाने हरिमुख माईजी
देखत महरि महर मुसकाने दंपति मन हरषाईजी ॥
सुनहु तात जननी बलि जाई उगलहु देव कन्हाईजी ॥
मुखते काढि दियो ब्रजनाथा लियो देव नँदराईजी ॥ १ ॥